साप्ताहिक
शांति मिशन
नई दिल्ली

वर्ष-28 अंक- 31 01 - 07 अगस्त 2021 पृष्ठ 12

अन्दर पढ़िए

महामारी में महंगाई का संकट
पृष्ठ - 6

परमाणु हथियारों का बढ़ता ज़ख़ीरा
पृष्ठ - 7

अमेरिका और नाटो संगठन सेना की अफ़ग़ानिस्तान से वापसी

क्या अफ़ग़ानिस्तान में शांति स्थापित हो सकेगी?

अमेरिका और नाटो देशों की सशस्त्र सेना के अफ़ग़ानिस्तान से निकलना जारी है जबकि अफ़ग़ानिस्तान सरकार और तालिबान के बीच संघर्ष जारी है, ऐसे में प्रश्न यह है कि क्या अफ़ग़ानिस्तान में शांति स्थापित हो सकेगी?

अमेरिका और उसके सहयोगी देशों ने अफ़ग़ानिस्तान को अधर में छोड़ दिया है। उसके और नाटो देशों की सैनिकों की वापसी जारी है। इस बीच अफ़ग़ानिस्तान में घट रही घटनाएं अफ़ग़ानी जनता के साथ साथ एशियाई देशों को भी परेशान कर रही हैं। विदेशी सैनिकों की वापसी के साथ ही तालिबान ने हमले तेज़ कर दिए हैं। कई इलाकों को अफ़ग़ान सेना से छीन लिया हैं इससे तालिबान की रणनीति अब स्पष्ट हो गई है। तालिबान ने काफी चालाकी से दोहा शांति वार्ता को धीमा रखा था वह अमेरिकी सैनिकों की वापसी का इंतज़ार कर रहा था। दोहा में बातचीत अभी रुकी हुई है पर तालिबान की इस बढ़ती ताक़त से पाकिस्तान खुश है। हालांकि चीन और ईरान परेशान है इसीलिए अफ़ग़ानिस्तान की शांति प्रक्रिया में ईरान और चीन सक्रिय हो गए हैं क्योंकि दोनों देशों को अलग अलग कारणों से पाकिस्तान नियंत्रित तालिबान पर भरोसा नहीं है। अफ़ग़ानिस्तान के मौजूदा हालात 2001 से अलग हैं।

20 वर्ष पहले अफ़ग़ानिस्तान में अमेरिका और सहयोगी नाटो देशों का जो जोश देखते बनते था, वह हताशा में बदल चुका हैं अफगानिस्तान में दो दशक से फंसे अमेरिका की स्थिति हर तरह से कमज़ोर हो गई हैं दो दशकों में बड़ी संख्या में अमेरिकी सैनिक मारे गए। अफ़ग़ानिस्तान के अभियान पर अब तक के सैन्य ख़र्च ने अमेरिकी अर्थव्यवस्था को भी भारी नुकसान पहुंचाया। अमेरिका यह अच्छी तरह से समझ चुका है कि अफ़ग़ानिस्तान की ज़मीन पर भी उसका वही हाल हो रहा है जो वियतनाम और ईराक में हुआ और आख़िरकार इन देशों से भी उसे अपना बोरिया-बिस्तर समेटना ही पड़ा। इसीलिए अमेरिका अफ़ग़ानिस्तान से बचकर भाग निकला है। आज अफ़ग़ान सरकार लाचार नज़र आ रही है। अफ़ग़ान फौज कमज़ोर पड़ चुकी है। अब तक उसे अमेरिकी सैनिकों की ओर से ताक़त मिली हुई थी। अत्याधुनिक हथियार थे और साथ ही अमेरिकी सैनिकों की मौजूदगी से मनोबल भी बना हुआ था। यह मनोबल अब टूट चुका है। तालिबान के ख़िलाफ़ लड़ने के बजाय अफ़ग़ान सैनिक जान बचाने के लिए दूसरे देशों में भाग रहे हैं या फिर तालिबान से जा मिल रहे हैं। इससे तालिबान लड़ाकों की ताक़त बढ़ रही है। तालिबान का दावा है कि उसने देश के एक तिहाई जिलों पर पूरी तरह से नियंत्रण कर लिया है इसलिए अब आने वाले दिनों में तालिबान और अफ़ग़ानि सेना के बीच और तेज़ होगी। इस ख़तरे से कोई इंकार नहीं करेगा कि तालिबान के आत्मघाती हमले बढ़ेंगे और इस हिंसा में बड़ी संख्या में निर्दोष नागरिक मारे जाएंगे। इन हालात में अफ़ग़ानिस्तान में लंबा गृह युद्ध भी छिड़ सकता है। अगर इसमें पड़ोसी मुल्कों ने हस्तक्षेप किया तो तालिबान की भी मुश्किल ज़्यादा बढ़ेगी। कई जगहों पर स्थानीय अफ़ग़ान आबादी ने तालिबान के ख़िलाफ़ हथियार उठा लिए हैं। वे अफ़ग़ानिस्तान की सरकारी सेना को सहयोग दे रहे हैं। हालांकि तालिबान अभी भी रणनीतिक तौर पर चालाकियां बरत रहा है। उसे कई पड़ोसी देशों के अफ़ग़ानिस्तान से जुड़े हितों की जानकारी है इसलिए उसने चालाकी से कहा है कि वह जल्द ही लिखित शांति योजना अफ़ग़ान सरकार को देगा। लेकिन तालिबान के तमाम दावों पर अफ़ग़ान सरकार को कोई भरोसा नहीं है।

अफ़ग़ानिस्तान में भविष्य की समस्या सिर्फ गृह युद्ध तक ही सीमित नहीं है। अगर संघर्ष बढ़ा तो इस देश की माली हालत और बिगड़ती चली जाएगी। अफ़ग़ान वित्त मंत्रालय के ताज़ा आंकड़े बता रहे हैं कि तालिबान के हमलों में तेज़ी की वजह से सरकार के राजस्व संग्रह को भारी नुकसान पहुंचा है। सीमा शुल्क की वसूली में कमी आई है। तालिबान ने अफ़ग़ानिस्तान में दूसरे दर्जे वाले कुछ सीमा शुल्क केंद्रों पर अफ़ग़ान सरकार के नियंत्रण को कमज़ोर कर दिया है। इस समय सीमा शुल्क संग्रहण पचास करोड़ अफ़ग़ानी के बजाय पन्द्रह करोड़ अफगानी प्रतिदिन रह गया है, यानि इसमें दो तिहाई रोज़ाना की गिरावट आई है। हालांकि एक तर्क यह भी दिया जा रहा है कि तालिबान के हमले को सिर्फ बहाना बनाया गया है। दरअसल सीमा शुल्क विभाग के अधिकारियों ने भ्रष्टाचार को बढ़ाया है। अधिकारी तालिबान का बहाना बना ख़ुद पैदा बटोर रहे हैं। ऐसे में बड़ा प्रश्न यह है कि अफ़ग़ानिस्तान सरकार की आय कैसे बढ़ेगी, देश को चलाने के लिए पैसे आएंगे कहां से? ज़ाहिर ऐसे हालात में अगर गृह युद्ध बढ़ा तो अफ़ग़ानिस्तान की अर्थव्यवस्था ढह जाएगी।

सरकार की आमद कैसे बढ़े और देश का विकास कैसे हो, इस पर कोई ठोस योजना बना पाने में अमेरिका ने कोई काम नहीं किया। यह उसकी प्राथमिकता में कभी रहा ही नहीं। अमेरिकी नीति ऐसे देशों को फंसाए रखने की ही रही है। तभी अमेरिकी हित पूरे होते हैं। पिछले दो दशक से काबुल पर राज करने वाले अफ़ग़ान नेताओं पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगते रहे हैं। हालांकि आतंकवाद के ख़िलाफ़ संघर्ष के नाम पर पश्चिम देशों ने अफ़ग़ानिस्तान को ख़ासी आर्थिक मदद दी। अफ़ग़ानिस्तान में विकास कार्य तेज़ करने की कोशिशें भी की गईं। अफ़ग़ानिसतान सरकार को सैन्य सहयोग राशि भी दी गई। लेकिन इन सबका कोई लाभ दिखा नहीं। आज तालिबान लड़ाके अफ़ग़ान सेना पर भारी पड़ रहे है। ऐसे में भविष्य में अफ़ग़ानिस्तान को कहीं से आर्थिक मदद मिलेगी, यह समय बताएगा।

अफ़ग़ानिस्तान को लेकर ईरान काफी सक्रिय है। उसने कुछ बातें स्पष्ट कर दी हैं। ईरान का कहना है कि तालिबान अफ़ग़ानिस्तान का अकेला चेहरा नहीं है। अफ़ग़ानिस्तान में तमाम जनजातियों की समावेशी सरकार बननी चाहिए। ईरान किसी भी कीमत पर उज्बेक, ताजिक और हजारा जनजातियों को कमज़ोर नहीं होने देगा। हालांकि ईरान और तालिबान के बीच पिछले कुछ समय में बेहतर संबंध विकसित हो गए हैं। लेकिन काबुल पर तालिबान के एकछत्र कब्ज़े को ईरान क़तई पसंद नहीं करेगा। यही कारण है कि ईरान अब सीधा हस्तक्षेप शुरू कर चुका है। पिछले दिनों ईरान ने तेहरान में तालिबान के वरिष्ठ नेता शेर मोहम्मद अब्बास स्तानकजाई और अफ़ग़ानिस्तान के पूर्व उपराष्ट्रपति युनूस कानूनी की वार्ता करवाई। इस वार्ता में ईरान ने अपनी मंशा साफ कर दी है कि वह काबुल में ईरान सारी जातियों की सम्मिलित सरकार चाहता है। ईरान कई कारणों से अफ़ग़ानिस्तान को लेकर गंभीर है। ईरान की लंबी सीमा अफगानिस्तान से लगती है। इस सीमा पर वे राज्य है जहां तालिबान मज़बूत है। ये अफ़ग़ानी राज्य ईरान के लिए सामरिक और आर्थिक महत्व वाले हैं क्योंकि इन राज्यों से ही पाकिस्तान के क्वेटा से तुर्कमेनिस्तान तक जाने वाला आर्थिक गलियारा गुज़रता है। ईरान को पता है कि अगर काबुल पर पाकिस्तान का एकछत्र राज हो गया तो इस इलाक़े

बाक़ी पेज 11 पर

अफ़ग़ानिस्तान में भविष्य की समस्या सिर्फ गृह युद्ध तक ही सीमित नहीं है। अगर संघर्ष बढ़ा तो इस देश की माली हालत और बिगड़ती चली जाएगी। अफ़ग़ान वित्त मंत्रालय के ताज़ा आंकड़े बता रहे हैं कि तालिबान के हमलों में तेज़ी की वजह से सरकार के राजस्व संग्रह को भारी नुकसान पहुंचा है। सीमा शुल्क की वसूली में कमी आई है। तालिबान ने अफ़ग़ानिस्तान में दूसरे दर्जे वाले कुछ सीमा शुल्क केंद्रों पर अफ़ग़ान सरकार के नियंत्रण को कमज़ोर कर दिया है। इस समय सीमा शुल्क संग्रहण पचास करोड़ अफ़ग़ानी के बजाय पन्द्रह करोड़ अफगानी प्रतिदिन रह गया है, यानि इसमें दो तिहाई रोज़ाना की गिरावट आई है। हालांकि एक तर्क यह भी दिया जा रहा है कि तालिबान के हमले को सिर्फ बहाना बनाया गया है। दरअसल सीमा शुल्क विभाग के अधिकारियों ने भ्रष्टाचार को बढ़ाया है। अधिकारी तालिबान का बहाना बना ख़ुद पैदा बटोर रहे हैं। ऐसे में बड़ा प्रश्न यह है कि अफ़ग़ानिस्तान सरकार की आय कैसे बढ़ेगी, देश को चलाने के लिए पैसे आएंगे कहां से?

अफ़ग़ानिस्तान में क्या करे भारत

भारत के लिए अफ़ग़ानिस्तान में इतिहास ख़ुद को दोहराने के लिए तैयार है। भारत के लिए अफ़ग़ानिस्तान में आशंकाएं उस समय से भी बदतर प्रतीत होती हैं, जब 1992 में वहां इसकी समर्थक सरकार गिर गई थीं। तब तक सोवियत संघर, जिसके साथ भारत का गठबंधन था, विघटित हो गया था। भारत एक बार फिर वहां अलग-थलग है, क्योंकि उस क्षेत्र में इसके करीबी माने जाने वाले अमेरिका ने काबुल छोड़ दिया है। यही नहीं, अमेरिका ने अशरफ़ ग़नी सरकार को तालिबान के गंभीर ख़तरे के बीच छोड़ दिया है, और तालिबान का भारत से कभी बेहतर रिश्ता नहीं रहा।

अगर भारत तालिबान के साथ देर से और संकोच के साथ बात कर भी रहा है, तो लगता है कि शायद वह कारगर नहीं हो रही, क्योंकि तालिबान का शीर्ष नेतृत्व, जिसका वास्तव में कूटनीतिक महत्व है, अपना वर्चस्व सुनिश्चित करने के लिए अफ़ग़ानिस्तान पर पूरी तरह कब्ज़ा करने में व्यस्त है, ताकि देश के भीतर या बाहर से उसे चुनौती न दी जा सके।

तालिबान के नियंत्रण में अफ़ग़ानिस्तान का कितना बड़ा इलाक़ा है, यह अब मायने नहीं रखता। उन्होंने अमेरिकियों के द्वारा खाली किए गए राजनीतिक और सैन्य शून्य को भर दिया है। उत्तरी अफ़ग़ानिस्तान के बड़े इलाकों के साथ-साथ जहां जातीय अल्पसंख्यक उज्बेक, हजारा और ताजिक रहते हैं, ताजिकिस्तान से लगती अंतर्राष्ट्रीय सीमा तक अपना नियंत्रण स्थापित कर उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया है कि नॉर्दन एलायंस जिसे भारत ने 2001 में समर्थन दिया था, जिसने अमेरिका के लिए ज़मीनी स्तर पर काफी लड़ाई लड़ी थी और जो काबुल से तालिबान को खाड़ फेंकने के लिए पर्याप्त था - फिर से आकार न ले सके। भारत के लिए स्थिति बेहद प्रतिकूल है, जैसा कि विदेश मंत्री एस॰ जयशंकर ने रूस और ईरान के विदेश मंत्रियों के साथ पिछले दिनों बातचीत करने के बाद महसूस किया। ये दोनों क्षेत्रीय शक्तियां, जो पहले अफ़ग़ान संघर्ष पर भारत के करीब थीं, अब दूर हो गई हैं। ये दोनों नहीं चाहते कि अफ़ग़ानिस्तान में किसी भी रूप में अमेरिकी मौजूदकी जारी रहे। उनकी स्थिति एक दूसरी प्रमुख क्षेत्रीय ताक़त चीन के समान है। आज 9/11 जैसा कोई कारण नहीं है, जो अमेरिकियों को अफ़ग़ानिस्तान में ले आया था। आज चीन एक विश्व शक्ति है, जो अमेरिका को चुनौती दे रहा है, हालांकि अमेरिका भी उसे चुनौती दे रहा है।

ऐसी ख़बरें हैं कि अमेरिका अब भी इस क्षेत्र में आतंकवाद विरोधी शक्तियों को एकजुट करने में उम्मीद करता है। अमेरिका अफ़ग़ानिस्तान से बाहर उच्च तकनीक वाले 'हाइब्रिड युद्ध' की योजना बना रहा है, जैसा कि सीरिया में किया गया था। इस

दो दशकों तक तालिबान को सफलतापूर्वक पनाह और समर्थन देने, अफ़ग़ानिस्तान में उनके मौजूदा सैन्य अभियान को सुविधाजनक बनाने तथा चीन का समर्थन सुनिश्चित करने का यह पाकिस्तानी रुख़ भारत के लिए उतना ही चिंताजनक होना चाहिए, जितना कि अमेरिका और पश्चिमी ताक़तों के लिए। यहां की खनिज संपदा में चीन की पहले से गहरी दिलचस्पी है।

योजना के तहत तुर्की और कुछ मध्य एशियाई देशों में सैन्य अड्डा बनाने की परिकल्पना की गई है। उज्बेकिस्तान और ताजिकिस्तान से संपर्क किया जा रहा है। पर अपनी धरती पर रूसी हथियारों की मौजूदगी और बगल में चीन के होते हुए ऐसा नहीं लगता कि वे अमेरिकियों को उपकृत कर संकट को आमंत्रित करेंगे।

तालिबान ने अमेरिका की मदद के ख़िलाफ़ सबको चेताया हैं हैरानी की बात नहीं कि 9/11 के बाद के सालों में आतंकवाद के ख़िलाफ़ अमेरिकी जंग का पूर्व बहादुर सेनानी पाकिस्तानी अमेरिकियों को हवाई क्षेत्र और समर्थन देने से इंकार करने वाला पहला देश बन गया है। चीन के समर्थन पर इमरान ख़ान सुरक्षित खेल खले रहे हैं।

दो दशकों तक तालिबान को सफलतापूर्वक पनाह और समर्थन देने, अफ़ग़ानिस्तान में उनके मौजूदा सैन्य अभियान को सुविधाजनक बनाने तथा चीन का समर्थन सुनिश्चित करने का यह पाकिस्तानी रुख़ भारत के लिए उतना ही चिंताजनक होना चाहिए, जितना कि अमेरिका और पश्चिमी ताक़तों के लिए। अफ़ग़ानिस्तान की खनिज संपदा में चीन की पहले से गहरी दिलचस्पी है। अफ़ग़ानिस्तान में चीन-पाक गठबंधन बड़ा आकार लेने के लिए तैयार है, क्योंकि चीन तालिबान के काबुल पर कब्ज़ा करने के बाद चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे को अफ़ग़ानिस्तान तक बढ़ा रहा है। अगर अमेरिकी 'हाइब्रिड' युद्ध अशरफ ग़नी को काबुल में राष्ट्रपति पद पर बनाए रखने में सफल नहीं होता, तो ऐसा जल्दी ही हो सकता है।

भारत के लिए अगर कुछ सांत्वना की बात है, तो यह कि पाकिस्तान की स्थिति भी बहुत जटिल है। अफ़ग़ानिस्तान में खुली छूट मिलने और काबुल में एक मित्र सरकार होने की पाकिस्तान को भारी कीमत चुकानी होगी। सत्ता पर काबिज़ हो जाने पर तालिबान उनके मित्र बने रहेंगे और वे डुरंड लाइन को अंतर्राष्ट्रीय सीमा के रूप में स्वीकार करेंगे, यह देखा जाना बाकी है। फिलहाल पाकिस्तान शरणार्थियों की आमद की उम्मीद कर सकता है, जो पहले से ही अनुमानित 28 लाख है। इसके अलावा नशीले पदार्थ भी आएंगे। इसके साथ चरमपंथियों और सांप्रदायिक समूहों की गतिविधियां भी बढ़ेंगी। अफ़ग़ान तालिबान और तहरीके तालिबान पाकिस्तान में वैचारिक समानता है। चीन भी इससे डरता है, इसलिए वह शिनझियांग में उइगरों को कुचलने की कोशिश कर रहा है।

पिछले दो दशकों में भारत ने अफ़ग़ानों से जो सद्भावना अर्जित की, वह तालिबान के सत्ता में आते ही समाप्त हो जाएगी। अफ़ग़ानिस्तान के राष्ट्र निर्माण में योगदान के लिए भारत ने तीन अरब डॉलर से अधिक का जो निवेश किया, वह फिलहाल

बाक़ी पेज 11 पर

टीसी के बिना भी होगा सरकारी स्कूलों में दाख़िला

निजी स्कूलों की मनमानी रोकने के लिए दिल्ली सरकार ने अब बिना ट्रांसफर सर्टिफिकेट (टीसी) के ही सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों को दाख़िला देने का फैसला लिया है। उपमुख्यमंत्री व शिक्षा मंत्री मनीष सिसौदिया ने बताया कि दिल्ली का कोई भी बच्चा यदि निजी स्कूल से निकलकर सरकारी स्कूल में दाख़िला लेना चाहता है तो टीसी न होने की वजह से उसे दाख़िले के लिए मना नहीं किया जाएगा।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि बहुत सारे निजी स्कूल बच्चों को टीसी नहीं दे रहे हैं। वे उनसे एक वर्ष की फीस मांग रहे हैं। इस वजह से बड़ी संख्या में अभिभावक चाह कर भी अपने बच्चों को निजी स्कूल से निकालकर सरकारी स्कूल में दाख़िला नहीं करवा पा रहे हैं। बहुत सारे अभिभावकों से ऐसी शिकायत मिलने के बाद ही इस बाबत शिक्षा निदेशालय को निर्देश दिया गया है।

श्री सिसौदिया ने कहा कि यदि स्कूल टीसी देने से मना कर रहा है तो बाकी दस्तावेज़ के आधार पर भी बच्चे सरकारी स्कूलों में दाख़िला ले सकते हैं। उन्होंने अभिभावकों को आश्वासन देते हुए कहा कि वे चिंता न करें। बच्चों के पिछले स्कूल से टीसी लाने का काम शिक्षा निदेशालय स्वयं करेगा।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि अभी तक दिल्ली के सरकारी स्कूलों में नर्सरी, केजी और पहली कक्षा के लिए 28,000 से अधिक आवेदन मिले हैं। छठी से 12वीं कक्षा के लिए 90,000 आवेदन आ चुके है। उन्होंने कहा कि पहले चरण में छठी से नवीं कक्षा में दाख़िले के लिए आवेदन नहीं कर पाने वाले छात्र 23 जुलाई से छह अगस्त के बीच ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। कक्षा 11वीं के लिए आवेदन दसवीं की बोर्ड परीक्षा के परिणाम आने के बाद किए जा सकेंगे।

यूटीपैक की परियोजनाओं को एलजी की मंज़ूरी

राजधानी के ढांचागत विकास को विश्व स्तरीय बनाने एवं लोगों की आवागमन संबंधी सुविधाओं में इज़ाफ़ा करने के उद्देश्य से दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) की कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं को स्वीकृति दे दी गई। लोगों की पैदल चलने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए डीडीए की इंजीनियरिंग विंग यूनीफाइड ट्रैफिक एंड ट्रांसपोर्टेशन इन्फ्रास्ट्रक्चर (प्लानिंग एंड इंजीनियरिंग) सेंटर यानि यूटीपैक की गवर्निंग बॉडी की 63वीं बैठक में आवागमन से जुड़ीं इन परियोजनाओं पर उपराज्यपाल (एलजी) और डीडीए के अध्यक्ष अनिल बैजल की मौजूदगी में चर्चा की गई। इसके बाद इनको मंज़ूरी दे दी गई। डीडीए उपाध्यक्ष अनुराग जैन एवं अन्य संबधित एजेंसियों की मौजूदगी में आइएनए, मार्केट/मैट्रो स्टेशन के वॉक प्लान, आइटीओ जंक्शन, हौजखास-आइआइटी दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय (नार्थ और साउथ कैंपस) एवं कमला नगर और लाजपत नगर परियोजना को स्वीकृति दी गई। बैठक में नवादा, उत्तम नगर वेस्ट और जनकपुरी ईस्ट मैट्रो स्टेशन का मल्टी मॉडल इंटीग्रेशन (एमएमआइ) परियोजना भी पास की गई। बैठक में गवर्निंग बॉडी द्वारा पूर्व में पास की गई परियोजनाओं के प्रगति की भी एलजी ने समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों को दी गई समय सीमा में परियोजनाओं को पूरा करने के निर्देश दिए।

मेडल जीतकर देश का नाम रोशन करेंगे खिलाड़ी : सिसौदिया

ओलंपिक शुरू हो चुका है, और पहले ही दिन भारत की मीरा कुमार चानू ने रजत पदक जीतकर उम्मीदें बढ़ा दी है। इससे पहले दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसौदिया ने टोक्यो ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे दिल्ली के खिलाड़ियों का हौंसला बढ़ाने के लिए पिछले दिनों उनसे वर्चुअल संवाद किया। उन्होंने कहा कि हमारे खिलाड़ी मेडल जीतकर दिल्ली और देश का नाम रोशन करेंगे।

टोक्यो ओलंपिक में दिल्ली के चार खिलाड़ी मनिक बत्रा, दीपक कुमार, अमोज जैकब और सार्थक भांबरी टेबिल टेनिस, शूटिंग और ट्रैक एंड फील्ड इवेंट्स में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इनमें से तीन खिलाड़ी दिल्ली सरकार के मिशन एक्सीलेंस स्कीम का हिस्सा रह चुके हैं। उपमुख्यमंत्री ने खिलाड़ियों से कहा है कि वे ओलंपिक में अपना बेहतरीन प्रदर्शन करें और तनावमुक्त होकर खेलें। दिल्ली और देश के सभी लोगों की दुआएं उनके साथ हैं। संवाद के दौरान खिलाड़ियों ने कहा कि दिल्ली सरकार के मिशन एक्सीलेंस से उन्हें प्रशिक्षण के दौरान काफी सहायता मिली है। वहीं दिल्ली स्पोर्टस् यूनिवर्सिटी की उपकुलपति कर्णम मल्लेश्वरी ने भी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वे अपना बेहतरीन प्रदर्शन करें।

संपादकीय

शांति मिशन

यह हम किसका भविष्य बना रहे हैं?

भारत के मुख्य न्यायाधीश एनवी रमन्ना ने एक व्याख्यान में कहा, 'बड़े पैमाने पर ग़रीबी, अशिक्षा, पिछड़ापन, असमानताओं और कथित अज्ञानता के बावजूद स्वतंत्र भारत के लोगों ने खुद को बुद्धिमान साबित किया है। जनता ने अपने कर्तव्यों का बख़ूबी पालन किया है। अब उन लोगों की बारी है, जो राज्य के प्रमुख अंगों का संचालन कर रहे हैं। उन्हें यह विचार करना है कि क्या वे संवैधानिक जनादेश पर खरे उतर रहे हैं? सार्वजनिक विचार विमर्श, जो तर्कसंगत और उचित दोनों हो, को मानवीय गरिमा के एक अंतर्निहित पहलू के रूप में देखा जाना चाहिए। यह एक सार्थक लोकतंत्र के लिए आवश्यक है।

न्यायपालिका को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, विधायिका या कार्यपालिका के ज़रिए नियंत्रित नहीं किया जा सकता, वरना 'क़ानून का शासन' भ्रामक हो जाएगा।' जस्टिस रमन्ना ने सरकार को बड़ी सीख दी है। बीते कुछ सालों के दौरान हमारी अर्थव्यवस्था पटरी से उतर चुकी है। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवायें बदहाली का शिकार हैं। महंगाई और बेरोज़गारी ऐतिहासिक रूप से चरम पर है। किसान से लेकर प्रोफ़ेशनल्स तक संकट के दौर में जी रहे हैं। बेटियां और व्यापारी सुरक्षित नहीं है। सरकार अपनी संवैधानिक ज़िम्मेदारियों से बचने के लिए वह सब कर रही है, जो जनसामान्य के जीवन को ख़तरे में डालती और तनाव बढ़ाती है। तुर्रा यह है कि, सरकार दिनरात जुटी हुई है।

इस सम देशी मीडिया में तीन बातें छाई हुई हुई हैं। पहली धर्मांतरण, दूसरी ख़ालिस्तानी नेटवर्क और तीसरी विपक्षी दलों में अंदरूनी कलह। हमारा संविधान अनुच्छेद 25 में सभी को धर्म की स्वतंत्रता देता है। अंत:करण की स्वतंत्रता और धर्म को अबाध मानने आचरण करने के साथ ही उसका प्रचार प्रसार करने की स्वतंत्रता भी है। यह अधिकार, धर्म परिवर्तन के लिए विवश नहीं कर सकता, किन्तु कोई भी व्यक्ति स्वेच्छा से अपना धर्म चुन सकता है। सामान्य तौर पर ग़रीबी और भुखमरी से जूझ रहे लोगों को जिस धर्म संस्था से मदद और आश्रय मिलता है, वे उसको अपना लेते हैं। यह अपराध नहीं है बल्कि सरकार के संवैधानिक कर्तव्यों को पूरा करने में असफल रहने का प्रमाण है। इन दिनों धर्मांतरण के नाम पर रोज़ाना मुकदमे दर्ज किए जा रहे हैं।

चंद आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धर्मांतरण करने वाले मजबूर लोगों की सामाजिक सुरक्षा के लिए सरकार के पास कुछ नहीं है। इस शब्द के ज़रिए सांप्रदायिक एजेंडा सेट किया जा रहा है, जो नफ़रत का ज़हर घोलने के लिए काफ़ी है। तीन विवादित कृषि क़ानूनों के विरोध में पंजाब से शुरू हुए किसान आंदोलन ने बड़ा रूप ले लिया है। इसे तोड़ने के लिए कथित ख़ालिस्तानी कनेक्शन बनाया जा रहा है। विदेश में बसे परिवारों से आने वाली आर्थिक मदद को इसका आधार बनाया जाता है। हमारा देश मुद्दों की राजनीति करता रहा है मगर इस समय विरोधी दलों में फूट और अंतर्कलह मुद्दा बन रहा है।

सत्ता से इतर इन सभी दलों को जनता के लिए घातक या सत्ता का विकल्प न होने के रूप में प्रचारित किया जा रहा है। ये बातें सत्ता को मुफ़ीद और मीडिया को लाभ दिलाने वाली है। अगस्त 2019 में सरकार के बग़ैर लोकतांत्रिक प्रक्रिया पूरी किये अनुच्छेद 370 ख़त्म कर दिया था। इसको ख़त्म करने के साथ सपने दिखाये गये, कि कश्मीर स्वर्ग बनने वाला है मगर दो वर्ष बाद वहां हालात बद से बदतर हुए हैं। न कश्मीरी पंडितों को ठौर मिला और न उन्हें अपने घर। उनको जो नौकरियां मिलती थीं, वो भी बंद हो गईं। भारत में पिछली सरकार के मुक़ाबले मौजूदा सरकार के समय में सांप्रदायिक बवाल के मामलों में 28 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। 2014 में सांप्रदायिक बवाल की 133 घटनायें हुई थीं जो बढ़कर 194 हो गई। कोरोना काल की शुरुआत के समय मरकज़ के नाम पर मुसलमानों को कोरोना फैलाने का दोषी ठहराकर हमले और मुक़दमे किये गये।

दिल्ली में चल रहे सीएए और एनआरसी के ख़िलाफ़ शांतिपूर्ण आंदोलन पर हमला किया गया। दिल्ली को सांप्रदायिक दंगों में झोंक दिया गया, जिसमें हज़ारों लोगों का जीवन ख़तरे में पड़ा। मुस्लिम समुदाय के लोगों के घरों और दुकानों में आगज़नी-लूट की गई। दिल्ली पुलिस ने कार्रवाई सिर्फ़ मुस्लिम समुदाय के लोगों पर की जबकि कई घटनाओं में वीडियो सच बयां कर रहे थे। इन दंगों के ज़रिए जो ज़हर बहुसंख्यकों में बोया गया, वह ख़तरनाक है। छह महीने बाद देश के पांच राज्यों में चुनाव की प्रक्रिया शुरू होनी है। ऐसे समय में संवेदनशील राज्यों में सांप्रदायिकता को प्रधान मुद्दा बनाने के लिए एकतरफ़ा कार्रवाई शुरू की जा चुकी है जिससे मतदान हिन्दू मुस्लिम के एजेंडे पर हो सके। हम सभी को पता है कि सरकार की नीतियों के चलते देश में बेरोज़गारों की आधिकारिक संख्या 25 करोड़ पहुंच गई है जबकि अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के मुताबिक भारत में 40 करोड़ लोग बेरोज़गार हुए हैं। बेरोज़गारी दर 9.2 प्रतिशत की रफ़्तार से बढ़ रही है।

नतीजतन, देश में आत्महत्याओं की दर भी तेज़ी से बढ़ी है। 23 करोड़ से अधिक लोग ग़रीबी रेखा से नीचे पहुंच चुके हैं। मध्यम वर्ग सिमटता जा रहा है और ग़रीब बढ़ते जा रहे हैं। दो वक़्त की रोटी के लिए मोहताज लोगों की संख्या 80 करोड़ से अधिक हो गई है। थोक महंगाई दर भी करीब 13 प्रतिशत पहुंच रही है। घरेलू आवश्यक वस्तुओं की कीमत पिछले सात सालों के मुक़ाबले दोगुना से अधिक हो गई है। बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा देने का दावा करने वाली सरकार के आंकड़े ही बताते हैं कि सरकारी स्कूलों में 03 प्रतिशत इंटरनेट सेवा भी नहीं है। इन स्कूलों में 05 प्रतिशत कम्प्यूटर भी नहीं है।

71.26 प्रतिशत निजी स्कूलों में भी इंटरनेट नहीं है, जबकि 64.73 प्रतिशत स्कूलों के पास अपने कंप्यूटर भी नहीं है। बावजूद इसके, सरकार दावा करती है कि वह बेहतरीन शिक्षा दे रही है। बैंकों का कर्ज़ न अदा कर पाने के कारण तीन हज़ार कंपनियां एनसीएलटी में दीवालिया होने के लिए खड़ी है। अब तक करीब एक हज़ार कंपनियों को दीवालिया घोषित किया गया है, जिनकी संपत्ति से बैंकों का 15 प्रतिशत कर्ज़ भी वापस नहीं आ सका हैं अर्थव्यवस्था में राहत के नाम पर कर्ज़ का पैकेज एक बार फिर ऐलान कर दिया गया। यह कर्ज़ लेकर उसको चुकाने की हालत में न होने के कारण कंपनियां और लोग कर्ज़ लेने से बच रहे हैं। तमाम बड़ी कंपनियों ने भी अपने कर्ज़ कम करके काम को समेटा हैं। चंद कारपोरेट घरानों को छोड़कर कोई भी उद्योग बढ़त की ओर नहीं है। यह बात भारत के वित्त आयोग की रिपोर्ट से भी साफ होती है। हमारा दुर्भाग्य यह है कि सरकार इन अव्यवस्थाओं और बीमारियों से लड़ने के बजाय अपने ही नागरिकों से लड़ने में लगी है।

वह सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स और किसानों से एफआईआर/एफआईआर खेल रही है। मुखर युवाओं को मुलज़िम बनाकर जेल में डाला जा रहा है। इन हालात में चीफ़ जस्टिस रमन्ना का यह प्रश्न वाजिब है कि संवैधानिक जनादेश पर सरकार कितना खरा उतर रही है? असल में सरकार का दायित्व है कि वह सभी के लिए स्वर्णिम भविष्य का मार्ग बनाये। देश की जनता खुशहाली के साथ अपनी संवैधानिक आज़ादी से जिये। बच्चों और युवाओं के भविष्य की राह बेहतरीन हो। संकट तो यह है कि सरकार सिर्फ़ यही नहीं कर रही, बाकी उन सभी में वह दिन/रात लगी हुई है, जिनके ज़रिए मतों का तुष्टीकरण किया जा सके। अगर यही हाल रहे तो विस्टन चर्चिल का आज़ादी के छह माह पहले अपनी संसद में की गई भविष्यवाणी सत्य हो जाएगी, जो भारत को सिर्फ़ बर्बादी देती है, स्वर्णिम भविष्य नहीं

तारीख़े इस्लाम

ख़ुतबाते सीरते तैयिबा

मुफ़्ती मुहम्मद सलमान मंसूरपुरी | क़िस्त-83

फ़रमाती हैं कि मैंने तो यह जवाब दे दिया लेकिन इसी हालत में नबी-ए-अकरम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम पर वही की कैफ़ियत तारी हो गई, और जब आप फ़ारिग़ हुए तो आप के चेहरे पर मुसकुराहट थी, और हज़रत आइशा की बराअत में क़ुरआने पाक की सूरह नूर के अंदर दो रूकू नाज़िल हुए, और जिन लोगों ने आप पर बोहतान लगाया था उनकी सख़्त तरीन मज़म्मत की गई, और जिन लोगों ने बोहतान फ़ैलाने में अपना किरदार अदा किया था, उनके ऊपर हद्दे क़ज़फ़ जारी करने का ऐलान किया गया, जब आयतें नाज़िल हुईं, और अल्लाह तआ़ला की जानिब से बराअत हुई, तो हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैं यह यक़ीन करती थी कि मेरी बराअत होगी, लेकिन मुझे यह अंदाज़ा नहीं था कि अल्लाह तआ़ला क़ुरआने करीम में मेरी बराअत करेगा, वही भी हो सकती थी, फ़रिश्ते भी आकर कह सकते थे, लेकिन अल्लाह तआ़ला को आप का ऐज़ाज़ फ़रमाना था। (अल बिदाया वन्निहाया, 4/550, बुख़ारी शरीफ़, 2/596)

जब ये आयतें नाज़िल हुईं, तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि जाकर हुज़ूर का शुक्रिया अदा करो, तो नाज़ में फ़रमाने लगीं कि मैं हुज़ूर का शुक्रिया अदा नहीं करूंगी, मैं तो सिर्फ़ अपने उस अल्लाह का शुक्रिया अदा करूंगी जिस ने मेरी बराअत की है।

फिर आप ने सज़ायें जारी कीं, अ़ब्दुल्लाह बिन उबई पर डबल सज़ा जारी हुई, इस्लाम का क़ानून है कि अगर कोई शख़्स किसी पर बदकारी की तोहमत लगाए और चार अ़ैनी मर्द गवाह पेश न कर सके, तो उस कहने वाले पर बर सरे आ़म 80 कोड़े लगाये जायेंगे, और मरते दम तक उसकी शहादत क़ुबूल न होने का ऐलान होगा कि यह आदमी इस लायक़ नहीं है कि किसी मुक़द्दमे में इसकी गवाही ली जाए, कोई मामूली बात नहीं है कि किसी पर भी किसी तरह का इलज़ाम लगाया जाए, अ़ब्दुल्लाह बिन उबई पर 160 कोड़े की सज़ा जारी हुई और बक़िया पर हद्दे क़ज़फ़ लगाई गई, और मुनाफ़िक़ीन की यह साज़िश क़तअ़न नाकाम हो गई, और अल्लाह तआ़ला ने मज़ीद इज़्ज़त अ़ता फ़रमाई, और ऐलान कर दिया गया कि पाक बाज़ औ़रतें पाक बाज़ मर्दों के लिए हैं, और बद कार औ़रतें बद कार मर्दों के लिए हैं, पैग़म्बर पाक बाज़ हैं तो उनके हरमे मोहतरम में पाक बाज़ औ़रतें ही आयेंगी ख़बीस और बद कार औरतें आ ही नहीं सकतीं, अल्लाह तआ़ला को यह बात मंज़ूर नहीं है।(अन-नूर :26)

ग़ज़्वा-ए-अहज़ाब (ख़न्दक़)

इसी साल (यानी सन 5 हिजरी में) एक अहम वाक़िआ़ पेश आया जिसे इस्लामी तारीख़ का एक बड़ा अहम मोड़ कहना चाहिये कि अहले मक्का ग़ज़्वा-ए-बद्र में शिकस्त खा चुके थे, ग़ज़्वा-ए-ओहुद में कामियाबी नहीं मिली थी, दूसरी तरफ़ यहूद के क़बाइल अंदर ख़ाना हसद और बुग़्ज़ की आग में जल भुन रहे थे, और हुई बिन अख़तब वग़ैरह जो पहले ख़ैबर में चले गए थे, उन्होंने मक्का के लोगों को आमादा किया कि हम तुम्हारा साथ देंगे और एक भरपूर ज़बरदस्त हमला मदीना पर किया जाए, बनू ग़ितफ़ान वग़ैरह के लोग इकठ्ठा होने लगे, चूँकि मक्के वालों में आ़तिशे इन्तिक़ाम जल रही थी, उस में और ज़्यादती हो गई, और ज़बरदस्त मुश्तरका महाज़ मदीना पर चढ़ाई करने के लिए बनाया गया, कहा जाता है कि इस में दस हज़ार अफ़राद थे, उस ज़माने के ऐतिबार से यह बड़ी फ़ौजी मुहिम थी, और ये लोग मदीने पर चढ़ाई करने के लिए मक्के से तमाम साज़ व सामान और भरपूर तैयारी के साथ चल पड़े, और इरादा था कि इस मर्तबा तो ईंट से ईंट बजा देनी है, और मुसलमानों के बिल्कुल नेस्त व नाबूद(ख़त्म) कर देना है। (असह-हुस-सियर 143)

ब्राह्मण समाज में बेचैनी तो है लेकिन उसने अभी तय नहीं किया कि करना क्या है

विश्वंभर नाथ मिश्र

अगले वर्ष के शुरुआती महीनों मे प्रस्तावित उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में ब्राह्मण फेक्टर अहम भूमिका निभा सकता है। एक ओर जहां सत्तारुढ़ भाजपा अपने इस परंपरागत वोट बैंक को पाले में बनाए रखने के लिए कोई कोर कसर नहीं बाकी रख रही है, वहीं विपक्ष में भी इसे अपने साथ करने की होड़ सी मची हुई है। बसपा समाजवादी पार्टी ने सत्ता में आने पर लखनऊ में परशुराम की सबसे ऊंची प्रतिमा लगवाने का ऐलान कर रखा है। उधर कांग्रेस में किसी ब्राह्मण चेहरे को सीएम पद का उम्मीदवार घोषित करने की मांग उठ गई है। यूपी की राजनीती में ब्राह्मण क्यों महत्वपूर्ण है और आने वाले चुनाव में उनकी क्या भूमिका हो सकती है, पेश है इन तमाम सवालों के जवाब आइआइटी वाराणसी में प्रोफेसर विश्वंभर नाथ मिश्र दे रहे हैं इनका जवाब, पेश है उनके साथ एक साक्षात्कार के प्रमुख अंश :-

प्रश्नः- उत्तर प्रदेश में सभी दलों में ब्राह्मणों को अपने-अपने पाले में करने की होड़ मची हुई है, क्या वजह देखते हैं आप?

उत्तरः- चाहे 2014 और 2019 का लोकसभा चुनाव रहा हो या फिर 2017 का विधानसभा चुनाव, ब्राह्मणों ने भाजपा के पक्ष में वोट किया था। उसी का नतीजा था कि यूपी में भाजपा को अधिकतम सीटें मिलीं। इतनी सीटें राममंदिर आंदोलन के समय भी नहीं मिलीं थीं। लेकिन 2017 से 2021 के बीच राज्य शासन में बहुत कुछ ऐसा घटित हुआ है और हाल ही में केन्द्रीय मंत्रिपरिषद के फेरबदल में भाजपा ऐसे जातीय समीकरण बनाती दिखी है, जिससे ब्राह्मणों में बेचैनी है। ब्राह्मणों ने अभी कोई फैसला नहीं किया है लेकिन वे सोच ज़रूर रहे हैं कि क्या करना चाहिए। यहीं से विपक्ष को अपने लिए गुंजाइश बनती दिख रही है।

प्रश्नः- ब्राह्मण भाजपा का परंपरागत वोटर माना जाता है, भाजपा से उसे शिफ्ट करा पाना क्या विपक्ष के लिए आसान होगा..?

ब्राह्मण भाजपा का कोई मूल परंपरागत वोटर नहीं है। एक समय वह कांग्रेस का वोटबैंक हुआ करता था, लेकिन कुछ ऐसी परिस्थितियां बनीं जब वह कांग्रेस से भाजपा में शिफ्ट हो गया। ऐसा शिफ्ट हुआ कि तीन दशक से कांग्रेस राज्य में सत्ता में वापसी नहीं कर पा रही है। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि बीच में एक समय ब्राह्मणों ने भाजपा के मुक़ाबले एसपी/बीएसपी को भी वोट किया है।

उत्तरः- मैं यह नहीं कह रहा कि ब्राह्मण भाजपा से शिफ्ट हो रहा है या शिफ्ट हो जाएगा। यह तो समय तय करेगा। मेरा मानना है कि वह बेचैनी महसूस कर रहा है और यह सोच ज़रूर रहा है कि उसे क्या करना चाहिए। यह भी समझना चाहिए कि ब्राह्मण भाजपा का कोई मूल परंपरागत वोटर नहीं है। एक समय वह कांग्रेस का वोटबैंक हुआ करता था, लेकिन कुछ ऐसी परिस्थितियां बनीं जब वह कांग्रेस से भाजपा में शिफ्ट हो गया। ऐसा शिफ्ट हुआ कि तीन दशक से कांग्रेस राज्य में सत्ता में वापसी नहीं कर पा रही है। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि बीच में एक समय ब्राह्मणों ने भाजपा के मुक़ाबले एसपी/बीएसपी को भी वोट किया है। ब्राह्मण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह सम्मान का भूख होता है।

प्रश्नः- ब्राह्मण ने कांग्रेस का साथ क्यों छोड़ा था.?

उत्तरः- राम मंदिर आंदोलन का बहुत अहम रोल रहा इसमें। ब्राह्मण बहुत धार्मिक प्रवृत्ति का होता है उसे लगा कि अयोध्या में तो राम मंदिर बनना ही चाहिए। भाजपा राम मंदिर के लिए आंदोलन कर रही थी, यहीं से उसकी भाजपा के प्रति सहानुभूति पैदा हुई। छह दिसंबर 1992 की घटना के समय केन्द्र में नरसिम्हाराव सरकार के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार थी। मस्जिद गिराने के बाद केन्द्र सरकार की जो प्रतिक्रिया रही, उससे ब्राह्मणों को लगा कि कांग्रेस के रहते तो मंदिर बनने से रहा। अब अगर कोई अयोध्या में मंदिर बनवा सकता है तो वह भाजपा है। वहीं से वे भाजपा के साथ हो लिए।

प्रश्नः- अन्य जातियों के मुक़ाबले ब्राह्मणों की आबादी तो ज़्यादा नहीं है, फिर यूपी की राजनीति में वे इतने महत्वपूर्ण क्यों होते हैं..?

उत्तरः- आबादी कम हो सकती है लेकिन ब्राह्मण का वोट अकेले नहीं जाता। ब्राह्मणों का प्रभाव समाज के अलग अलग वर्गों पर होता है। ब्राह्मण के फैसले से वे वर्ग भी प्रभावित होते हैं। ब्राह्मण जिसे वोट कर रहा होता है, उसके प्रभाव वाला वर्ग भी उसी पार्टी को वोट कर देता है, यही वजह है कि ब्राह्मणों का साथ सभी पार्टियां चाहती हैं।

प्रश्नः- लेकिन 1989 के बाद उ.प्र. में कोई ब्राह्मण मुख्यमंत्री नहीं बना, जबकि इस बीच वहां भाजपा, एसपी, बीएसपी सभी की सरकारें बनीं?

उत्तरः- 90 का दशक सिर्फ राम मंदिर आंदोलन के लिए नहीं जाना जाता है, यह मंडल के लिए भी जाना जाता है। बहुत सारे सामाजिक समीकरण बदले। मनुवाद के नाम पर ब्राह्मणों के ख़िलाफ़ गोलबंदी भी हुई। पार्टियों को लगने लगा कि अगर उन्होंने मुख्यमंत्री पद के लिए किसी ब्राह्मण चेहरे को आगे किया तो उसे नुकसान हो सकता है। ब्राह्मण के पास भी कोई विकल्प नहीं था। इसी मजबूरी का फायदा उठाते हुए पार्टियां उसके वोट लेती रहीं।

90 का दशक सिर्फ राम मंदिर आंदोलन के लिए नहीं जाना जाता है, यह मंडल के लिए भी जाना जाता है। बहुत सारे सामाजिक समीकरण बदले। मनुवाद के नाम पर ब्राह्मणों के ख़िलाफ़ गोलबंदी भी हुई। पार्टियों को लगने लगा कि अगर उन्होंने मुख्यमंत्री पद के लिए किसी ब्राह्मण चेहरे को आगे किया तो उसे नुकसान हो सकता है। ब्राह्मण के पास भी कोई विकल्प नहीं था। इसी मजबूरी का फायदा उठाते हुए पार्टियां उसके वोट लेती रहीं।

प्रश्नः- माना जाता है कि 2007 के चुनाव में ब्राह्मणों ने बीएसपी को वोट किया था यह बीएसपी के सोशल इंजीनियरिंग थी या सिर्फ मिथ है?

उत्तरः- 2007 में ब्राह्मणों ने बसपा को वोट दिया, यह सच्चाई है। बसपा ने ब्राह्मणों को सबसे ज़्यादा टिकट दिए थे और भी बहुत सारे वादे थे, लेकिन वे वादे जब पूरे नहीं हुए तो 2012 के चुनाव में ब्राह्मणों ने उसे वोट नहीं किया। उन्होंने समाजवादी पार्टी को वोट कर दिया फिर 2014 में भाजपा में ब्राह्मणों की वापसी हुई। ❑❑

स्पेस प्रोग्राम में भारत किसी से कम नहीं : डॉ॰ शतेन्द्र शर्मा

सवालः- रिचर्ड ब्रैनसन और जेफ बेजोस जैसे अरबपतियों की अंतरिक्ष यात्रा और ईलॉन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स की कामयाबी के बाद स्पेस टूरिज़्म पर काफी चर्चा हो रही है। भारत की इस फील्ड में क्या स्थिति है?

जवाबः- स्पेस साइंस में दो बातें - स्पेस एक्सप्लोरेशन प्रोग्राम और टूरिज़्म। टूरिज़्म ऐसा है जब इंसान का पेट भर जाता है तो वह इधर उधर की सोचने गता है। वैसे रिचर्ड ब्रैनसन, बेजोस और ईलॉन मस्क के प्रोग्राम को स्पेस टूरिज़्म नहीं कह सकते। यह एक बड़े गुब्बारे में बैठाकर 15-15 मिनट की सैर करा लेना जैसा हैं इनका प्लान है कि किसी रॉकेट को स्पेस जेट से बांधकर 300-400 किलोमीटर ऊंचाई तक उड़ाकर ले जाएं और महसूस कराएं कि आप स्पेस में जीरो ग्रैविटी में रहकर आए हैं। इसके लिए अरबों रुपये कौन देगा? भारत का स्पेस प्रोग्राम अपी ज़रूरतों को टारगेट किए हुए हैं। हमारी प्राथमिकता कम्युनिकेशन और डिफेंस नेटवर्क को मज़बूत करने की है।

सवालः- फोर्ब्स मैगजीन के मुताबिक अरबपतियों की संख्या के लिहाज़ से अमेरिका और चीन के बाद भारत का नंबर है। फिर ऐसी पहल यहां के अरबपति क्यों नहीं करते?

जवाबः- हमारे देश में अमीर तो हैं, लेकिन वे थोड़े से मज़े के लिए अरबों रुपये खर्च करने की नादानी क्यों करेंगे। पता चला है कि स्पेस टूरिज़्म में एक सीट 55 मिलियन डॉलर (लगभग 400 करोड़ रुपये) की पड़ती है। हमारे यहां लोग सोचेंगे, इतने पैसे में फैक्ट्री लगा लूं, कोई नया बिजनेस शुरू कर लूं। हमारे बिजनेसमैन की प्रॉयरोरिटी अलग है। भारत की आम सोच भी ऐसी नहीं बनी है कि ये तफरीह करने इतना पैसा ख़र्च करके कुछ मिनट के लिए स्पेस में जाएंगे।

सवालः- दुनिया में स्पेस टूरिज्म विकसित होता है तो आने वाले समय में यह कितना फायदा दे सकता है?

जवाबः- स्पेस टूरिज्म तो बहाना है, आगे चलकर इसमें कई प्रयोग हो सकते हैं। आने वाले समय में जो कम्युनिकेशन सिस्टम को और वेदर को स्पेस से कंट्रोल कर पाएगा, वही दुनिया पर राज करेगा। स्पेस में पहले से भेजे गए 90 प्रतिशत सैटेलाइट कचरा बन चुके हैं। इससे नई टेक्नोलॉजी, नई कपौसिटी के सैटेलाइट भेजने में दिक्क़त आ रही है। स्पेस टूरिज्म का एक बड़ा फायदा यह होगा कि उस कचने को साफ करने में इससे मदद मिलेगी। इस तरह की टैक्नोलॉजी में एक बार जाएंगे, तो इसके इस्तेमाल के कई रास्ते दिखेंगे।

सवालः- अमेरिका में नासा भी निजी कंपनियों से हाथ मिला रहा है। वहां सरकारी और निजी क्षेत्र मिलकर स्पेस एक्सप्लोरेशन कर रहे हैं। भारत में इस मॉडल को सफल बनाने के लिए क्या करना चाहिए?

जवाबः- अमेरिका में शुरू से ही प्राइवेट और गवर्नमेंट पार्टनरशिप रही है। वहां लाफिज, एचपी टेक्सस इंस्ट्रूमेट्स, बोइंग जैसी एरोनॉटिकल कंपनियों पहले से ही स्पेस साइंस के प्रोग्राम में शामिल रही हैं। हमारे यहां अब टाटा और एलएंडीटी डिफेंस के प्रोग्राम से जुड़ी हैं। एचएएल और डीआरडीओ जैसे पब्लिक सेक्टर संस्थान इसरो के साथ मिलकर काम कर ही रहे हैं। महिन्द्रा भी कर रही है। हमारे यहां की कंपनियां भी किसी से कम नहीं है। ऐसी और बड़ी बड़ी कंपनियों को आगे आना चाहिए। इन्हें जोड़ने के लिए सरकारी स्तर पर प्रोग्राम चलाए जाने चाहिए।

सवालः- इसरो के पास अंतरिक्ष को लेकर काफी आधुनिक तकनीक है तो क्या स्पेस एक्सप्लोरेशन में हम तेज़ी से तरक्क़ी नहीं कर सकते?

जवाबः- ऐसा नहीं है कि हम लोग काम नहीं कर रहे हैं। हम उनके मुक़ाबले खड़े होकर अपनी लॉंचिंग कैपेसिटी और तकनीक उन्नत कर रहे हैं। लेकिन हमारा उद्देश्य अलग रहेगा। इसरो के पास बहुत अच्छी तकनीक है। स्पेस एजेंसियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं, मंगलयान वगैरह को हमने देखा ही। हजारों सेटैलाइट हमारी पृथ्वी के चारों ओर 32-45 हजार किलोमीटर की रेंज में घूम रहे हैं। ये अब बेकार हो गए हैं। इंडिया की सबसे अच्छी बात यह है कि हमारे वैज्ञानिकों का लक्ष्य रहता है लॉंचिंग कास्ट कम रखना। अपनी इस रणनीति को क़ायम रखते हुए भारत पुराने सैटेलाइट की जगह ख़ाली करने के लिए उन देशों को सस्ती सर्विस दे सकता है। इसके लिए हमें तैयार होना होगा।

सवालः- अमेरिका और चीन के स्पेस प्रोग्राम काफी आगे हैं। हमारा स्पेस प्रोग्राम अमेरिका और चीन की टक्कर का हो, इसके लिए

बाक़ी पेज 11 पर

तपती धरती बढ़ती दुश्वारियाँ

मौसम का चरित्र बदलने से तनाव के सामने अनगिनत समस्याएं चुनौती बनकर खड़ी हो गई हैं। मगर जिनके चलते समस्याएं पैदा हो रही हैं, उन कारणों को जानते हुए भी उन्हें ख़त्म करना कठिन हो गया है। ग़ौरतलब है कि उन कारणों में ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस गैसों का लगातार बढ़ते जाना और प्राकृतिक संसाधनों का मनमाना दोहन प्रमुख है।

भारत मौसम विज्ञान के आंकड़ों के अनुसार 1901 से लेकर 2020 के दरम्यान भारत के औसत तापमान में 0.17 डिग्री की बढ़ोत्तरी हो चुकी है। 2016 भारत का अब तक का सबसे ज़्यादा गर्म वर्ष रहा हैं अब तक के पन्द्रह सर्वाधिक गर्म सालों में से बारह वर्ष 2006 के बाद दर्ज किए गए है। मौसम के बदलाव ने आम आदमी और वैज्ञानिकों को चिंता में डाल दिया है। खेती, किसानी, बागवानी और औषधियों से जुड़े सभी क्षेत्रों पर ग्लोबल वार्मिंग का जो ख़तरनाक असर पिछले बीस सालों से देखा जा रहा है, उससे कई तरह की समस्याएं और बीमारियों का खतरा लगातार बढ़ रहा है। ग़ौरतलब है कि पिछले बीस सालों में कृषि उत्पादों में 15 प्रतिशत तक कमी आई है। वैश्विक पैदावार में चार प्रतिशत की कमी आई हैं। रिपोर्ट के अनुसार भारत में धान के उत्पादन वाले लगभग चालीस प्रतिशत क्षेत्र के खेती लायक़ न रह जाने की आशंका जताई गई है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण धान, गेहूं, जौ और आलू जैसी फसलों में पौष्टिक गुणों में छह प्रतिशत तक की कमी आई है। गौरतलब है कि अगर पौष्टिक गुणों की कमी आगे भी बनी रही तो खाद्यान्न मानव सभ्यता के रक्षक नहीं बल्कि समस्या बने रहेंगे। वैज्ञानिकों के मुताबिक ग्लोबल वार्मिंग के असर से बारिश का स्वरूप असंगत हुआ है। इससे समय से पहले, तो कहीं समय बीत जाने पर बहुत अधिक बरसात होने की वजह से फसल चक्र पर ज़बरदस्त असर देखा जा रहा है। गौरतलब है कि आज से चालीस या पचास वर्ष पहले के मौसम और आज के मौसम में आए बदलावों को जो जानते हैं उनका मानना है कि पर्यावरण प्रदूषण ने हर क्षेत्र में व्यापक असर डाला है, जिससे ऋतु चक्र और दूसरे तमाम क्षेत्रों पर ज़बरदस्त असर हुआ है।

कोरोना काल में पिछले एक वर्ष में जलवायु परिवर्तन की कई अचरज भरी घटनाएं देखने-सुनने को मिली हैं। इस वर्ष पिछले एक सौ बारह सालों में सबसे कम गर्मी मई-जून में पड़ी। इसी तरह हाल के दशकों में मानसूनी बारिश ही कम नहीं हुई है, बल्कि बारिश का वितरण भी प्रभावित हुआ है। वैज्ञानिकों के मुताबिक ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते प्रभाव की वजह से मानसून बनने की परिस्थितयों पर असर पड़ा है। दिल्ली मौसम विभाग के आंकड़ों के अनुसार 1981-90 के दशक में मानसूनी बारिश 881 मिमी थी, जो 1991-2000 के दशक मे 877, 2001-01 के दौरान 847 तथा 2001-20 के दशक के बीच 860 मिली दर्ज की गई। बरसात का लगातार कम होना इस बात का संकेत है कि अगर इसी तरह वर्षा कम होने का क्रम बना रहा, तो आने वाले कुछ दशकों में बरसात की जगह अकाल ले सकता है। इससे विश्व स्तर पर भुखमरी, तरह तरह की बीमारियां, जंगलों और हरियाली का विनाश, भूजल स्तर के नीचे जाने, पीने के पानी की किल्लत सहित अनगिनत समस्याओं और संकटों से विश्व को सामना करना पड़ सकता है।

ग्लोबल वार्मिंग के असर से मध्य भारत में पिछले पैंसठ सालों में बारिश में गिरावट आई है। ऋतुचक्र में बदलाव की वजह से असमय बारिश, सूखा, बाढ़ और अकाल जैसी परिस्थितियां निरंतर निर्मित हो रही है। इससे विस्थापन एक स्थायी समस्या का रूप ले सकता है। अनुमान के मुताबिक जल संकट, सूखे, कृषि संकट और समुद्री जल स्तर में बढ़ोत्तरी की वजह से 2050 तक दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका और लातिन अमेरिका में तीन से चौदह करोड़ आबादी पर आंतरिक विस्थापन का ख़तरा मंडरा सकता है। अगला युद्ध जल के कारण मानने वालों की आशंका सही साबित होती दिखाई पड़ रही है। वैज्ञानिकों ने माना है कि आने वाले सालों में जलवायु परिवर्तन के कारण भूमिगत जल के स्तर में लगभग तीन चौथाई की कमी के कारण ढाई अरब और लोग जल संकट से जूझ रहे होंगे। ऐसी स्थिति में विश्व स्तर पर पानी के बाबत 'जल युद्ध' छिड़ सकता है। ग़ौरतलब है कि पचास प्रतिशत विश्व की आबादी पानी के संकट से आज भी जूझ रही है।

बहुत कम लोग जानते होंगे कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण महंगाई लगातार बढ़ रही है। महंगाई बढ़ने से विश्व के गरीब और निम्न मध्य वर्ग के लिए दो वक्त की रोटी जुटाना मुश्किल हो गया है। आने वाले समय में भोजन, पानी और दवाओं क कमी की समस्या विकराल रूप धारण कर सकती है। अनुमान है कि आने वाले सालों में एक करोड़ से ज़्यादा बच्चे कुपोषण और बौनेपन का शिकार होंगे, जिससे गरीब परिवारों के सामने तरह-तरह की नई समस्याएं पैदा होंगी। बढ़ते धरती के तापमान की वजह से जिस तरह से गर्मी, ठंठक और बेमौसम बरसात की समस्याएं बढ़ रही हैं, उससे विश्व की आधी से ज़्यादा आबादी में डेंगू, चिकनगुनिया, जीका, पीला बुख़ार जैसी संक्रामक बीमारियों से निपटने के लिए सरकारों को अतिरिक्त संसाधन और धन व्यय करने की विवशता होगी। वैज्ञानिकों के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग का असर ग़रीब परिवारों के बच्चों के लिए सबसे ज़्यादा ख़तरनाक हो सकता हैं उनकी डायरिया से होने वाली मौतों का दायरा और आंकड़े बेतहाशा बढ़ेंगे।

ग्रीन हाऊस गैसों से बढ़ते प्रदूषण के चलते कई दूसरी समस्याएं भी पैदा होने लगी हैं। इससे दुनिया में एक तरह से मौसमी आतंकी की छाया देखने को मिलने लगी है। अमेरिका जैसे देश में बर्फीले तूफान ने पिछले सालों में जो क़हर ढाया, उसे वहां के लोग शायद कभी न भूला पाएं। ऐसे ही भारत में पिछले सालों में उत्तराखंड, बिहार, तमिलनाडू और हालिया महाराष्ट्र के कई ज़िलों भारी बारिश से तबाही ने लोगों को हलकान कर दिया है।

ग्लोबल वार्मिंग का असर महानगरों, शहरों में रहने वाले लोगों की दिनचर्या पर भी पड़ रहा है। लोगों के अंदर सहनशीलता, सुख सुविधाओं के कारण बहुत कम होती जा रही है। सम्पन्न परिवारों में बच्चे, बूढे और जवान सभी सुख सुविधाओं में जीने के आदी हो गए हैं।

बाक़ी पेज 11 पर

रोज़गार .....

कैरियर चुनने में जल्दबाज़ी न करें

आज हम सुन रहे हैं कि कोरोना काल में लोगों को अपनी जॉब से हाथ धोना पड़ रहा है, और लोग इस विपत्ति के अपने लिए कूंठा मान लेते हैं। अक्सर ऐसा देखने को मिल रहा है कि लोग अपने काम में सैलरी पसंद करते हैं, मगर जॉब से बोर हो जाते हैं। जितने मन से आपने कैरियर चुना था, अब आपको लगता है कि यह तो वह काम नहीं है, जो आप करना चाह रहे थे। दरअसल, कैरियर में अगर संतुष्टि न हो, न तो भविष्य सुरक्षित होता है और न ही मन को शांति मिलती हैं जॉब करके अगर आपके साथ भी ऐसा ही हो रहा हो तो आपको फिर से गंभीरतापूर्वक सोचने की ज़रूरत है।

समस्या को पहचानें

कई बार एक ही काम करते-करते अक्सर युवा बोर होने लगते हैं। ऐसे में उनको लगता है कि यह वह काम नहीं है, जिससे उसे प्यार था फिर वह दूसरा कुछ सोचना शुरू कर देते हैं, सबसे पहले तो यह जानना ज़रूरी है कि आपको ऐसा क्यों लगता है कि आपको दूसरे कैरियर में जाना चाहिए। क्या इनमें से कोई समस्या तो नहीं है, जिस कारण आप ऐसा करने के बारे में सोच रहे हैं। बॉस अकड़ू है, सैलरी कम है, या काम की अधिकता है।

कैरियर ग़लत चुना या सोच बदल गई?

कई लोग ऐसे होते हैं, जो अपने काम को लेकर शुरुआत में तो खुश रहते हैं मगर बाद में वही काम पसंद नहीं आता हैं ऐसा ज़्यादातर लोगों के साथ नहीं, मगर कुछ लोगों के साथ ज़रूर होता है। ऐसे में सोचने की बात यह है कि आपके साथ क्या हो रहा है। ऐसा तो नहीं कि आपका मूड बदल गया है। ऐसे में इस बात का भी ध्यान रखें के आप कैरियर के किस पड़ाव पर हैं। शुरुआत में और कम आयु में आसान है, लेकिन एक समय के बाद कैरियर बदलना थोड़ा मुश्किल है।

फैसला करने के पहले गंभीरता से सोचें

किसी भी मुक़ाम पर पहुंचने के लिए समय लगता है। जब भी लगे कि कैरियर गलत चुन लिया हैऔर अब अपना पैशन ही फॉलो करना है तो फायदे-नुकसान, दोनों को देखें। इसके साथ ही यह सोचना भी ज़रूरी है कि यह जॉब आपके लिए कितनी ज़रूरी है, आपकी ज़िम्मेदारी कितनी है। साथ ही उन लोगों को भी दिमाग़ में रखें, जो सिर्फ पैशन (जुनून) फॉलो कर रहे हैं। उनके लिए यह काम अब सिर्फ काम है। खुद को यह समझाना ज़रूरी है कि पैशन में मज़ा कब तक आएगा, क्योंकि भी पैशन हो, एक दिन काम में ही तब्दील हो जाएगा।

सूझ बूझ से करें नई शुरूआत

पैशन को फॉलो करना क़तई ग़लत नहीं है, लेकिन सूझ-बूझ से ही काम करना ज़रूरी है। अगर आपको पैशन फॉलो करना है तो शुरूआत छोटी रखें और जॉब में ही रहते हुए उसे भी समय दें।

जॉब छोड़ना समझदारी नहीं

अगर आप नया काम करने के लिए पुरानी नौकरी छोड़ने की सोच रहे हैं तो यह सोच लें कि कहीं बाद में आपको पछताना न पड़े। दरअसल, नई शुरूआत में कई बार आय न के बराबर होती है। ऐसे में आप, अपने बजट और ज़रूरतों को कैसे मैनेज करेंगे इस बारे में आंकलन कर ले तो बेहतर होगा। कई लोगों को नौकरी छोड़ने के बाद पछतावा होता है इसलिए जल्दबादी या भावनाओं में बहकर कोई फैसला क़तई न करें।

कई बार शुरूआत में तो आप अपना काम पूरी शिद्दत से करते हैं लेकिन बाद में वही काम आपको बोर करने लगता हैं ऐसे में इस बात पर ध्यान से सोचें कि आपका मूड आखिर क्यों बदल गया। इस पर भी विचार करें कि आप कैरियर के किस पड़ाव पर हैं। अगर आपको लगे कि आपने ग़लत कैरियर चुन लिया है और अब अपने पैशन (जूनुन) को फॉलो करना चाह रहे हैं तो उसके फायदे और नुकसान को देख-समझ लें। इस पर भी विचार करें कि मौजूदा नौकरी आपके लिए कितनी ज़रूरी है, कितने लोगों की ज़िम्मेदारी आप पर है। कोई भी फैसला ले तो उसमें अपने जीवन साथी का भी परामर्श ले सकते हैं। ❑❑

इस्लामी दुनिया

हिंसा के बीच पीओके में जीती इमरान की पार्टी

इस्लामाबाद : प्रधानमंत्री इमरान खान की पाकिस्तान तहरीके-ए- इंसाफ़ (पीटीआई) पाक कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में अगली सरकार बनाने के लिए तैयार है। विधानसभा चुनाव में भारी हिंसा व धांधली के आरोपों के बीच पीटीआई सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। उसने 45 में से 25 सीटें जीतीं जबकि पीपीपी ने आठ और पीएमएल-एन ने सिर्फ छह सीटें जीती।

टयूनिशिया : राष्ट्रपति ने हिसंक प्रदर्शनों के बीच पीएम को किया बर्ख़ास्त

टयूनिश : उत्तरी अफ्रीका के टयूनिशिया में राष्ट्रपति कैस सैयद ने देश में जारी हिंसक प्रदर्शनों के बीच संसद भंग कर पीएम हिचम मेचिचि को बर्ख़ास्त कर दिया है। विपक्ष ने इसे तख़्लापलट बताया है जबकि राष्ट्रपति ने कहा कि उनका यह क़दम सांविधानिक दायरे में है। इस फैसले की स्थानीय लोगों ने सराहना करते हुए जश्न मनाया। टयूनिशिया के लोग कोरोना से निपटने में सरकार की नाकामी से गुस्से में प्रदर्शन कर रहे थे। हिंसक प्रदर्शनों के बाद राष्ट्रपति ने कहा कि उन्होंने देश में शांति लाने के इरादे से यह क़दम उठाया है।

22 हजार परिवार भागकर काबुल आए

काबुल : तालिबान के भीषण हमलों से भयभीत हज़ारों नागरिक काबुल चले आए हैं। तालिबान के बढ़ते ख़तरे को देखते हुए अफग़ान सरकार ने कई क्षेत्रों में रात का कर्फ्यू लगा दिया है। यहां अभी भी सरकारी सेना का नियंत्रण है। गजनी से भागकर काबुल आए एक पिता ने बताया कि उसके दो बेटों को तालिबान ने मार डाला। ये लोग न तो सरकारी कर्मचारी थे और न ही सुरक्षाकर्मी। तकरीबन 22 हजार अफग़ार परिवार भागकर काबुल में आ चुके हैं।

के/2 पर चढ़ाई में स्कॉटलैंड के पर्वतारोही की मौत

इस्लामाबाद : दुनिया के दूसरे सबसे ऊंचे पर्वत के-2 की चोटी पर चढ़ने का प्रयास करते समय स्कॉटलैंड के एक जाने माने पर्वताराही रिक एलन की भूस्खलन से मौत हो गई। पाक पर्वतरोही अधिकारी ने कहा कि वे एक ऐसी दिशा से शिखर पर पहुंचने की कोशिश कर रहे थे, जिसे इससे पहले पर्वतारोहण के लिए इस्तेमाल नहीं किया गया था। पाकिस्तान के अल्पाइन क्लब के सचिव करीर हैदरी ने कहा कि 68 वर्षीय रिक एलन की तीन मौत हुई, जबकि उनके तीन सहयोगी बचा लिए गए हैं।

सरोज कुमार

महामारी में महंगाई का संकट

आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया वाला मुहावरा अब गुज़रे ज़माने की बात है। महंगाई और कमाई की मौजूदा परिस्थिति नया मुहावरा गढ़ने की ओर बढ़ रही है, जहां आमदनी की अठन्नी भी ग़ायब हो सकती है। आम आदमी की तस्वीर नए मुहावरे में कैसी होगी, कह पाना कठिन है। फिलहाल मांग न होने के बावजूद महंगाई बढ़ रही है और आमदनी न होने पर भी ख़र्च मजबूरी बन गया है। अर्थव्यवस्था का यह चरित्र एक विचित्र स्थिति पैदा कर रहा है। खुदरा महंगाई दर जून में लगातार दूसरे माह छह प्रतिशत से ऊपर रही है। इसके नीचे जाने की फिलहाल संभावना नही है, क्योंकि थोक महंगाई दर का रुख़ तेज़ी से ऊपर जाने वाला ही बना हुआ है।

मई में यह रिकॉर्ड 12.94 प्रतिशत दर्ज की गई, जो अप्रैल में 10.49 प्रतिशत थी। वर्ष 2010 के बाद पहली बार थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआइ) पर आधारित महंगाई दर दो अंकों में दर्ज की गई है। थोक महंगाई दर की यह ऊंचाई आने वाले समय में खुदरा महंगाई दर को ऊपर ले जाएगी। यानि आगे का समय आम आदमी के लिए, विशेष तौर पर से ग़रीबी रेखा के नीचे पहुंच चुके तेईस करोड़ लोगों के लिए कठिन रहने वाला है।

अर्थशास्त्र की भाषा में, विशेषतौर से विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए महंगाई को अच्छा माना जाता है, बशर्ते यह मांग आधारित हो। मांग बढ़ने का अर्थ होता है कि लोगों के पास कमाई है और वे अधिक उपभोग कर रहे हैं। लेकिन जब उपभोग घट चुका हो, महंगाई फिर भी बढ़ रही हो और यह स्थिति अधिक समय तक टिकी रह जाए तो एक आत्मघाती परिस्थिति पैदा होने लगती है। देश कमोबेश इसी दौर से गुज़र रहा है। मांग बुरी तरह घटी हुई है प्रति व्यक्ति निजी उपयोग 2020-2021 में घटकर 55,783 रुपय हो गया, जो 2019-20 में 62,056 रुपए था। पिछले चार सालों से निजी उपभोग में गिरावट का रुख़ है। कोरोना काल में इसमें ज़्यादा गिरावट आई। वित्त वर्ष 2021-22 में भी उपभोग में गिरावट रहने का अनुमान है।

अमेरिकी विचार समूह-पेव रिसर्च सेंटर के अनुमान के अनुसार भारत में दो डॉलर या डेढ़ सौ रुपए से कम कमाने वाले ग़रीबी की संख्या महामारी के सालभर के भीतर छह करोड़ से बढ़कर साढ़े तेरह करोड़ हो गई। अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर सस्टेनेबल इम्प्लायमेंट (सीएसई) के अध्ययन के अनुसार तेईस करोड़ भारतीय ग़रीबी रेखा के नीचे जा चुके हैं। यानि उनकी कमाई राष्ट्रीय न्यूनतम दिहाड़ी तीन सौ पचहत्तर रुपए से नीचे चली गई है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनॉमी (सीएमआईई) के अनुसार महामारी की दूसरी लहर के कारण एक करोड़ लोग बेरोज़गार हो गए और सनतानवें प्रतिशत परिवारों की कमाई घट गई है। जून में बेरोज़गारी दर में हालांकि सुधार हुआ, फिर भी वह 9.17 प्रतिशत दर्ज की गई। मई में यह 11.90 फीसद हो गई थी। कमाई घटने और बेरोज़गारी बढ़ने के बाद भी निजी उपभोग का जो स्तर है, उसका अर्थ यह है कि लोग जीने के लिए अपनी बचत को ख़र्च कर रहे हैं। लेकिन यह ख़र्च लंबे समय तक नहीं टिकने वाला। यदि यही स्थिति आगे भी बनी रही तो मांग में और गिरावट आएगी।

महंगाई अपने आप में महामारी न बन जाए, इससे पहले इसे रोकने के क़दम उठाने ही होंगे। फिलहाल इस दिशा में कोई ठोस पहल नहीं दिखाई दे रही है। महंगाई पर नियंत्रण के मोटे तौर पर दो उपाय हैं। मौद्रिक और राजकोषीय। मौद्रिक उपाय के तहत आरबीआइ बाजार से तरलता खींचकर मांग घटाने की कोशिश करता है। राजकोषीय उपाय में भी सरकार कर बढ़ा कर मांग घटाने की कोशिश करती है लेकिन मौजूदा परिस्थिति मांग घटाने की अनुमति नहीं देती, क्योंकि बाज़ार से मांग पहले से ही लुढ़की हुई है। हां, सरकार उन अरबपतियों पर विशेष कर लगा सकती है, जिनकी संपत्ति कोरोना काल के दौरान अप्रैल 2020 से जुलाई 2020 तक पैंतीस फीसद बढ़ गई है। इसके अलावा आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं के आयात पर शुल्क घटाए जा सकते हैं।

मांग और कमाई घटने के बाद भी महंगाई बढ़ रही है। यह महंगाई मौसमी नहीं है, बल्कि लगभग हर क्षेत्र में है। आम आदमी के उपभोग के सभी सामान महंगे होते जा रहे हैं। महंगाई आंकड़ों से आगे निकल कर अनुभव के स्तर पर पहुंच गई है। वैश्विक स्तर पर आवश्यक उपभोग वाली वस्तुओं की कीमतें बढ़ने और विनिर्माण लागत बढ़ने के कारण महंगाई दर ऊपर जा रही है। फैक्टरी उत्पादन में मई 29.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है, लेकिन महंगाई के दबाव वाले कारक अपनी जगह बने हुए हैं। अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में कच्चे तेल की कीमत पहली जुलाई को 74.69 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गई, जो वर्षभर पहले 42.18 डॉलर प्रति बैरल थी। देश के कई शहरों में पेट्रोल और डीजल सौ रुपए प्रति लीटर के पार से भी ऊपर पहुंच गया है। तेल की कीमतें बढ़ने से विनिर्माण लागत बढ़ती है और माल ढुलाई महंगी हो जाती है। परिणामस्वरूप सामान महंगे हो जाते हैं। पिछले सात माह में यह पहला मौक़ा है, जब खुदरा महंगाई दर लगातार दो माह से भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) की निर्धारित छह प्रतिशत की ऊपरी सीमा से ऊपर बनी हुई है। दुखद पक्ष यह है कि जून में खाद्य पदार्थों की महंगाई दर और बढ़ गई और यह 5.15 प्रतिशत दर्ज की गई। मई में यह 5.01 प्रतिशत थी, जबकि अप्रैल में मात्र 1.96 प्रतिशत। खाने पीने का सामान महंगा होने से आम आदमी सीधे तौर पर प्रभावित हो रहा है।

सरकार ने मार्च 2026 तक महंगाई दर को दो फीसद से छह फीसद के बीच बनाए रखने के लिए आरबीआई को निर्देश दे रखा है। आरबीआई ने पिछले दिनों मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की अपनी बैठक में मौजूदा वित्त वर्ष के लिए 5.1 फीसद महंगाई दर का अनुमान जताया था। लेकिन हालात हाथ से निकलते दिख रहे हैं। यदि महंगाई दर में तेज़ी का यह रुख़ बना रहा तो आरबीआई अपनी प्रमुख दरें बढ़ाने के लिए विवश हो सकता है जबकि महामारी के प्रभाव से निपटने के लिए केन्द्रीय बैंक ने लगातार छठी बार अपनी द्विमासिक मौद्रिक नीति समीक्षा में प्रमुख दर यानि रेपो रेट को चार प्रतिशत पर बनाए रखा, ताकि बाज़ार में तरलता बनी रहे। यदि आरबीआई रेपो रेट बढ़ाता है तो तरलता की स्थिति तनावपूर्ण हो जाएगी। नक़दी का संकट पहले से ही है। ऐसे में आर्थिक गतिविधियों को अतिरिक्त झटका लगेगा। आपूर्ति पक्ष बाधित होगा, परिणामस्वरूप महंगाई और बढ़ेगी। महंगाई बढ़ने से सरकार के लिए उधारी लेना भी महंगा हो जाएगा। जबकि उधारी लेकर अधिक ख़र्च करना महंगाई से निपटने का सरकार के पास एक अहम उपाय है।

महंगाई अपने आप में महामारी न बन जाए, इससे पहले इसे रोकने के क़दम उठाने ही होंगे। फिलहाल इस दिशा में कोई ठोस पहल नहीं दिखाई दे रही है। महंगाई पर नियंत्रण के मोटे तौर पर दो उपाय हैं। मौद्रिक और राजकोषीय। मौद्रिक उपाय के तहत आरबीआइ बाजार से तरलता खींचकर मांग घटाने की कोशिश करता है। राजकोषीय उपाय में भी सरकार कर बढ़ा कर मांग घटाने की कोशिश करती है लेकिन मौजूदा परिस्थिति मांग घटाने की अनुमति नहीं देती, क्योंकि बाज़ार से मांग पहले से ही लुढ़की हुई है। हां, सरकार उन अरबपतियों पर विशेष कर लगा सकती है, जिनकी संपत्ति कोरोना काल के दौरान अप्रैल 2020 से जुलाई 2020 तक पैंतीस फीसद बढ़ गई है। इसके अलावा आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं के आयात पर शुल्क घटाए जा सकते हैं और ऐसी वस्तुओं के निर्यात पर रोक भी लगाई जा सकती है।

महंगाई कम करने के लिए तेल की क़ीमतें हर हाल में घटानी होगी। सरकार उत्पाद शुल्क के उस हिस्से को आसानी से वापस ले सकती है, जिसे कोरोना काल के दौरान बढ़ाया गया था। मांग न होने के कारण अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की क़ीमत आई भारी गिरावट का लाभ आम उपभोक्ताओं को न मिल जाए, इसके लिए सरकार ने मार्च से मई, 2020 के बीच दो बार में पेट्रोल पर तेरह रुपए और डीजल पर सोलह रुपये विशेष उत्पाद शुल्क लगा दिया था। इस विशेष उत्पाद शुल्क को बाद में वापस लेने की बात कही गई थी लेकिन अभी तक ऐसा हुआ नहीं है। तेल की कीमत घटने से महंगाई में तत्काल राहत मिलेगी। मौजूदा परिस्थिति में सरकार को कर्ज़ लेकर अधिक ख़र्च करने की भी ज़रूरत है। लोगों की जेब में पैसे जाएंगे तो वे महंगाई से मुक़ाबला भी कर लेंगे। बेशक इससे राजकोषीय घाटा बढ़ेगा, लेकिन मौजूदा परिस्थिति से निकलने का दूसरा रास्ता भी नहीं है, चार किलो मुफ्त अनाज तो बिल्कुल भी नहीं।❑❑

परमाणु हथियारों का बढ़ता ज़ख़ीरा

संजय वर्मा

हिरोशिमा-नागासाकी पर परमाणु बम हमले के बाद से दुनिया में इस प्रश्न पर विचार चलता रहा है कि आख़िर परमाणु ऊर्जा का भविष्य क्या है। मसला यह है कि एक ओर इससे पैदा की जाने वाली बिजली को ज़रूरी बताया जाता है, तो दूसरी ओर परमाणु हथियारों की होड़ बढ़ती जा रही है। साफ सुथरी बिजली की बात हो तो परमाणु ऊर्जा की वकालत करने वालों की कमी नहीं है। इस समय दुनिया में करीब दस प्रतिशत बिजली नाभिकीय संयंत्रों (न्यूक्लियर रिएक्टरों) से ही पैदा हो रही है। इस ऊर्जा की वकालत की मूल वजह यह है कि परमाणु ऊर्जा को कार्बन उत्सर्जन घटाने का सबसे उम्दा विकल्प माना जाता है। लेकिन जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अगर परमाणु बिजली संयंत्र बनते हैं तो उनसे जुड़ा वह ख़तरा भी हमारे सामने आ जाता है कि कहीं दुनिया इसका इस्तेमाल परमाणु हथियार बनाने और उनके भंडारों में बढ़ोत्तरी के लिए न करने लगे। इधर, चीन के ऐसे ही बर्ताव ने इस संकट का साफ संकेत किया है।

कुछ समय पहले ही अमेरिकी अख़बार वाशिंगटन पोस्ट में छपी एक रिपोर्ट में दावा किया गया कि चीन के पश्चिम प्रांत गांझू के यूमेन शहर के पास रेगिस्तान में सौ से अधिक मिसाइल साइलोज (मिसाइल रखने के ठिकाने) बनाए जा रहे हैं। इन ठिकानों का इस्तेमाल तरल ईंधन वाली अंतरमहाद्वीपीय मिसाइलों को रखने के लिए होगा। ऐसी मिसाइलें परमाणु हथियारों से लैस होती हैं। ये अत्याधिक ऊर्जा की मदद से लंबी दूरी तक मार कर सकती हैं। इन साइलोज का महत्व यह है कि इनमें रखी जाने वाली मिसाईलों की न सिर्फ देखभाल और मरम्मत आसानी से हो जाती है। इन ठिकानों के निर्माण को चीन की परमाणु नीति में उल्लेखनीय बदलाव के रूप में दर्ज किया है। एक ही बार में कई परमाणु हथियार ले जाने में समर्थ ये मिसाईलें अमेरिका तक मार कर सकती हैं। वैसे तो ऐसी मिसाइलों के निर्माण को परमाणु प्रतिरोध (डेटरेंट) का ज़रिया माना जाता है, यानि इनकी मौजूदगी के आधार पर या उनका भय दिखा कर कोई देश दुश्मन देशों से ऐसे हमलों को रोकने में कामयाब हो जाता है। लेकिन चीन के हालिया रुख़ को देख कर इसकी गारंटी नहीं रह गई है कि वह इन परमाणु मिसाईलों का उपयोग सिर्फ प्रतिरोध के लिए करना चाहता है।

चीन अब ऐसी प्रतिस्पर्धा वाली नीति अपना रहा है जिससे दुनिया में परमाणु हथियारों को लेकर असंतुलन का ख़तरा बढ़ सकता है। न्यूनतम प्रतिरोध की परमाणु नीति से हटते हुए परमाणु हथियारों का जख़ीरा बढ़ाने की उसकी नीति न्यूक्लियर ट्रायड यानि ज़मीन आसमान और समंदर से परमाणु हथियार दाग़ने की क्षमता विकसित करने पर केन्द्रित हो गई है। यह उसके रुख़ में लगातार बढ़ रही आक्रामकता का स्पष्ट संकेत है। पेंटागन की एक रिपोर्ट के मुताबिक चीन के पास फिलहाल लगभग दो सौ परमाणु हथियार है। अब चूंकि चीन अपनी सेना का आधुनिकीकरण कर रहा है, ऐसे में बहुत मुमकिन है कि उसके परमाणु हथियारों की संख्या मौजूदा संख्या के मुक़ाबले दोगुनी हो जाए। उल्लेखनीय है कि हाल में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के सौ वर्ष पूरे होने पर दिए गए भाषण में राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा था कि चीन को डराने का प्रयास करने वाली विदेशी ताक़तों का सिर कूचल दिया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा था कि चीन अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाएगा। ऐसे बयानों और कार्रवाईयों से चीन के इरादों पर संदेह होता है।

चीन ने पहला परमाणु परीक्षण 1964 में किया था। उसके बाद से उसने पैंतालीस परमाणु परीक्षण किए हैं। हालांकि चीन ने व्यापक परमाणु प्रतिबंध संधि (सीटीबीटी) पर दस्तख़त किए हैं, फिर भी उसके पास तीन सौ बीस परमाणु हथियार बताए जाते हैं। इनमें से सौ के करीब लंबी दूरी की मिसाईलों पर लगे हैं। वर्ष 1974 में पहला परमाणु परीक्षण करने वाले भारत ने अब तक सीटीबीटी पर परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) का अनुमोदन भले नहीं किया है, लेकिन वह अपने परमाणु हथियारों का किसी देश पर पहले इस्तेमाल नहीं करने (नो फर्स्ट यूज) की नीति पर क़ायम है। भारत की नीति दुनिया में भरोसेमंद मानी जाती है, लेकिन 1998 में परमाणु परीक्षण करने वाले पड़ोसी देश पाकिस्तान की मंशा पर किसी को यकीन नहीं है।

पर प्रश्न है कि परमाणु हथियारों की होड़ पैदा करने में क्या सिर्फ चीन की ही भूमिका रही? इसका एक गंभीर पक्ष यह है कि विकसित देशों से लेकर विकासशील और पाकिस्तान जैसे राष्ट्रों में परमाणु हथियारों की भूख बढ़ती जा रही है। आंकलन कहता है कि अमेरिका के पास आज भी तीन हज़ार आठ सौ परमाणु हथियार हैं। इनमें से साढ़े सत्रह सौ हथियान विभिन्न मोर्चों पर तैनात हैं। ध्यान रहे कि दुनिया में सबसे पहले परमाणु शक्ति सम्पन्न होने वाला अमेरिका अकेला ऐसा देश है, जिसने पहली और आख़िरी बार परमाणु हथियारों का इस्तेमाल (हिरोशिमा-नागासाकी) में किया था। सत्तर के दशक में एक दौर ऐसा आया था जब अमेरिका के परमाणु हथियारों की संख्या इकतीस हजार पार कर गई थी। ऐसा दावा है कि पिछले 75 सालों में अमेरिका ने कुल 66 हजार 500 सौ परमाणु हथियार बनाए, जिनमें से कई हजार परमाणु हथियार विभिन्न संधियों के तहत नष्ट किए गए। इसके अलावा करीब दो हज़ार परमाणु हथियारों को अमेरिका ख़त्म कर चुका है। तत्कालीन सोवियत संघ (आज का रूस) भी परमाणु हथियारों के मामले में अमेरिका से पीछे नहीं रहा। दूसरे विश्वयुद्ध के ख़ात्मे के बाद हर मामले में अमेरिका से होड़ लेने वाले रूस ने अमेरिका से चार साल बाद 1949 में अपना पहला परमाणु हथियार जमा कर लिए। वर्ष 1986 में रूस भी चालीस हज़ार से अधिक परमाणु हथियारों के ज़खीरे पर बैठा था। हालांकि शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद रूस ने भी इन हथियारों की संख्या घटाई और इन्हें छह हज़ार तीन सौ तक ले आया। फिलहाल दावा है कि रूस ने करीब सोलह सौ परमाणु हथियार तैनात कर रखे हैं और सत्ताइस सौ हथियार भंडारों में सुरक्षित रखे हैं।

चीन ने पहला परमाणु परीक्षण 1964 में किया था। उसके बाद से उसने पैंतालीस परमाणु परीक्षण किए हैं। हालांकि चीन ने व्यापक परमाणु प्रतिबंध संधि (सीटीबीटी) पर दस्तख़त किए हैं, फिर भी उसके पास तीन सौ बीस परमाणु हथियार बताए जाते हैं। इनमें से सौ के करीब लंबी दूरी की मिसाईलों पर लगे हैं। वर्ष 1974 में पहला परमाणु परीक्षण करने वाले भारत ने अब तक सीटीबीटी पर परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) का अनुमोदन भले नहीं किया है, लेकिन वह अपने परमाणु हथियारों का किसी देश पर पहले इस्तेमाल नहीं करने (नो फर्स्ट यूज) की नीति पर क़ायम है। भारत की नीति दुनिया में भरोसेमंद मानी जाती है, लेकिन 1998 में परमाणु परीक्षण करने वाले पड़ोसी देश पाकिस्तान की मंशा पर किसी को यकीन नहीं है। बात-बात पर पाकिस्तान के मंत्री पाव-पाव भर के एटमी हथियारों के इस्तेमाल करने की धमकी देते रहे हैं। यही नहीं, आशंका यह भी है कि पाकिस्तान अगले दस सालों में और परमाणु हथियार जमा करने की नीति पर चल रहा है और वह प्लूटोनियम और यूरोनियम आधारित परमाणु हथियार तैयार करने में जुटा है। पाकिस्तान और चीन जैसे परमाणु सम्पन्न पड़ोसियों को देखते हुए भारत की परमाणु नीति वक्त की ज़रूरत प्रतीत होती है। हालांकि चीन की नज़रों में उसका मुक़ाबला अब अमेरिका-रूस से है। चीनी शासक कहते भी रहे हैं कि उनके पास रूस-अमेरिका से काफी कम संख्या में परमाणु हथियार हैं। शायद यही वजह है कि वह अमेरिका के दबाव के बावजूद रूस के साथ नए हथियार नियंत्रण समझौते में शामिल नहीं हो रहा है। इस दबाव को ख़ारिज करते हुए चीन के सरकारी मीडिया ग्लोबल टाइम्स में लिखा जाता रहा है कि चीन को पश्चिमी देशों की राय की परवाह किए बिना अपनी सुरक्षा ज़रूरतों के हिसाब से हथियार बनाने चाहिए।

चूँकि ज़्यादातर देश शक्ति संतुलन साधने के लिए परमाणु हथियारों की ज़रूरत की व्याख्या अपने मन मुताबिक करते रहे हैं, इसलिए निकट भविष्य में इसकी संभावना कम ही है कि इस सिलसिले में कोई प्रभावी रोक लग सकेगी। इसलिए न्यूनतम प्रतिरोध और जवाबी कार्रवाई करने के लिए विश्वसनीय परमाणु क्षमता हासिल करने की इस भूख का अंत कूटनीतिक स्तर पर ही संभव है। संकट यह है कि अगर किसी छोटी सी वजह से भी दुनिया के किसी कोने में एक बार परमाणु अस्त्र चलने लगे, तो शायद अब कोई जंग दुनिया के सर्वनाश के साथ ही ख़त्म होगी। ❑❑

ख़ास ख़बरें

पेगासस : इस्राईल और फ्रांस एनएसओ में करेंगे चर्चा

येरुशलम : दुनियाभर में पेगासस से जासूसी को लेकर मच रहे बवाल के बीच इस्राईल और फ्रांस पेरिस में स्पाईवेयर कंपनी एनएसओ पर चर्चा कर सकते हैं। इस जानकारी के अनुसार इस्राईली रक्षा मंत्री बेनी गैंट्ज अपनी फ्रांसीसी समकक्ष फ्लोरेंस पानी के साथ बैठक के लिए दौरे पर जाएंगे। दोनों की मुलाकात के दौरान लेबनान संकट और विश्व शक्तियों के अलावा ईरान के साथ परमाणु वार्ता पर भी बातचीत होगी।

असहनीय निगरानी के बीच चीनी कवि ली हुइजी ने की खुदकुशी

गुआंगदोंग : राष्ट्रपति शी जिनपिंग के कार्यकाल में असहनीय निगरानी के बीच चीन के कवि और करंट अफेयर्स के स्तंभकार ली हुइजी ने आत्महत्या कर ली है। वे शी जिनपिंग की नीतियों के प्रखर आलोचक रहे हैं। रेडियो फ्री एशिया के मुताबिक 62 वर्षीय ली हुइजी ने ग्वांगदोंग के एक अस्पताल में आख़िरी सांस ली। हुइजी के दोस्त ली जुवेन ने बताया कि कवि ने एक सुसाइड नोट ऑनलाइन पोस्ट किया था। इसमें कहा गया था कि शी के सत्ता संभालने के बाद से सार्वजनिक अभिव्यक्ति की आज़ादी की जगह कम होती जा रही है।

भारतवंशी को नस्ली टिप्पणी में जेल

सिंगापुर : भारतीय मूल के एक व्यक्ति को सिगांपुर में एक सार्वजनिक अस्पताल में नस्ली टिप्पणी करने और स्टाफ पर हमला करने के मामले में पांच सप्ताह की जेल की सज़ा सुनाई गई है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक 52 वर्षीय पेरियानायगम अप्पावू को यहां की एक अदालत ने उत्पीड़न के दो आरोपों और आपराधिक बल प्रयोग के एक आरोप में दोषी ठहराने के बाद यह सज़ा सुनाई।

इराक में 18 वर्ष बाद ख़त्म होगा अमेरिकी युद्ध मिशन

वाशिंगटन : राष्ट्रपति जो बाइडेन ने इराकी प्रधानमंत्री मुस्तफ़ा अल कदीकी के साथ बैठक में पुष्टि की है कि अमेरिका 2021 के अंत तक इराक में अपने युद्ध मिशन को ख़त्म कर देगा। बाइडेन ने कहा, अमेरिकी सेना इराक़ल बलों को आईएस के ख़िलाफ़ प्रशिक्षण और सहायता देना जारी रखेगी। दोनों देशों ने 18 वर्ष बाद इराक़ में अमेरिकी लड़ाकू मिशन ख़त्म करने के समझौते पर दस्तख़त कर दिए। अमेरिका व इराक़ ने भी वाशिंगटन में हुई एक रणनीतिक वार्ता के बाद सांझा बयान में कहा कि युद्धक निभाने वाली अमेरिकी सेना 31 दिसंबर तक इराक़ से वापसी कर लेगी।

इस्लाम की सुरक्षा सेवा और मदरसों का विकास

हज़रत नानौतवी का सबसे महान् कार्य हिन्दुस्तान में दीन की शिक्षा को जीवित करने के लिये मदरसों के द्वारा एक आंदोलन चलाना था। हज़रत नानौतवी ने मदरसों के लिये उसूले हश्त गाना (आठ नियम) बनाये थे, जिन के अधीन उन को चलना था। उन के प्रयत्न से विभिन्न स्थानों पर दीनी मदारिस जारी हो गये, अत: थाना भवन, ज़िला मुज़फ़्फ़र नगर, गुलावठी ज़िला बुलंद शहर, कैराना ज़िला मुज़फ़्फ़र नगर, बुलंद शहर, मेरठ, मुरादाबाद आदि स्थानों पर मदरसे स्थापित हो गये जिनमें से अधिकतर आज तक स्थिर हैं और अपने आसपास में इल्म व दीनी ख़िदमत कर रहे हैं। आज भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में जो दीनी मदरसों का जाल बिछा हुआ है वास्तव में हज़रत नानौतवी के उसूले हश्त गाना की रोशनी में क़ायम है।

वर्तमान समय में आज जो पढ़ने पढ़ने का कक्षावार तरीका प्रचलित है, पुराने समय में ऐसा नहीं था बल्कि इसके ख़िलाफ़ था। साधारण रूप से आलिम (विद्वान) अपने मकानों और मस्जिदों में बैठ कर अल्लाह के नाम पर पढ़ाते थे और जीवन चलाने के लिये कोई व्यापार या दूसरा काम करते थे। या अल्लाह या भरोसा रखकर जीवन गुज़ारते थे। हज़रत नानौतवी ने अपने बड़ों के इस रिवाज़ को जारी रखा। हज़रत नानौतवी साहब जीवन निर्वाह के साधन के साभ पठन-पाठन का सिलसिला भी सदैव जारी रखा। हदीस की 06 मशहूर किताबों 'सिहाह-ए-सित्ता' के अलावा मसनवी मौलाना रूम और दूसरी किताबें भी पढ़ाते थे। मगर पढ़ाना किसी मदरसे के बजाये, प्रेस की चार दीवारी, मस्जिद या मकान पर होता था जहां विशेष शिष्य ही उपस्थित होते थे।

1860 ई॰ में हज के लिये तशरीफ़ ले गये। वापसी के बाद मुजतबाई प्रेस मेरठ में नौकरी कर ली 1868 ई॰ तक इसी प्रेस से सम्बद्ध रहे। इसी ज़माने में दूसरी बार हज के लिये जाना हुआ और इस के बाद हाशमी प्रेस से संबंध हो गया। इस बीच पठन-पाठन बराबर जारी रहा, मगर किसी मदरसे की नौकरी कभी पसंद नहीं की, सवानेह क़ासमी मख़्तूत: के लेखक लिखते हैं –''यह सबको मालूम है कि इस्लामी मदरसा देवबंद आप ही का स्थापित किया हुआ है, मगर कभी लाभ उठाने का प्रयत्न नहीं किया। आरंभ में मजलिस-ए-शूरा ने प्रयत्न किया भी कि इस मदरसे की मुदर्रसी स्वीकार कर लें और इसके बदले वेतन लें, मगर स्वीकार नहीं किया। और कभी किसी प्रकार से भी एक पाई के लिये भी मदरसे से नहीं चाहा। हालांकि रात-दिन मदरसे की भलाई के लिये तल्लीन रहे और तालीम में लगे रहे। अगर कभी मदरसे की क़लम दवात से अपना कोई ख़त लिखते तो तुरंत एक आना मदरसे के खज़ाने में जमा कर देते।

आवभगत और संतोष, विनम्रता इस सीमा तक थी कि आमिल के बनाव श्रृंगार, पगड़ी, आदि का भी प्रयोग नहीं करते थे। सम्मान से बहुत घबराते थे। कहा करते थे –'इस नाम को इल्म ने ख़राब किया नहीं तो अपनी दशा को ऐसी मिट्टी में मिलाता कि यह भी न जानता कि क़ासिम नामी कोई व्यक्ति पैदा भी हुआ था।'' जिन कामों में प्रदर्शन होता उन से दूर रहते थे।

अन्य धार्मिक सेवायें

हिन्दुस्तान में अंग्रेजी साम्राज्य के शासन के साथ-साथ ईसाईयत ने

अंग्रेज़ सरकार ने हिन्दुओं को मुसलमानों के मुक़ाबले खड़ा किया। हिन्दुस्तान में मुसलमानों को सियासी बढ़ोत्तरी प्राप्त थी। अंग्रेज़ों ने अपनी नीति के तहत हिन्दुओं को बढ़ाया और मुसलमानों को घटाया। जब समाजी और आर्थिक क्षेत्र में हिन्दू आगे बढ़ गये तो उनको धार्मिक बड़ाई, समझाई और हिन्दुओं को मुसलमानों के साथ वाद-विवाद पर उतार दिया और इसके लिये अवसर भी दिया ताकि हिन्दू मुसलमानों से खुलेआम बहस (मुनाज़रा) करें।

भी पैर फैलाना आरंभ कर दिया था और हर प्रकार से हिन्दुस्तान के लोगों और विशेष रूप से मुसलमानों को ईसाई बनाने की ज़बरदस्त कोशिश की गई। कम्पनी के समर्थन और सहायता से मुल्क के प्रत्येक क्षेत्र में इसाईयत का प्रचार लागू कर दिया और 1857 ई॰ के इंक़लाब के बाद इस बात ने बड़ा ज़ोर पकड़ा। पादरी बाज़ारों, मेलों और आमजन समूहों में इस्लाम और हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ पर आरोप लगाने लगे। हज़रत नानौतवी ने दिल्ली में रहे हुए जब यह हालत देखी तो अपने शागिर्दों से फरमाया कि वह भी इसी प्रकार खड़े होकर बाज़ार में भाषण दिया करें और पादरियों की काट करें। एक दिन स्वयं अपने आप को प्रकट किये बग़ैर जन समूह में पहुंचे और पादरी ताराचंद से मुनाज़रा (वाद-विवाद) किया और उस को भरे बाज़ार में हराया।

अंग्रेज़ सरकार ने एक ख़तरनाक चाल चली कि हिन्दुओं को मुसलमानों के मुक़ाबले खड़ा किया। हिन्दुस्तान में मुसलमानों को सियासी बढ़ोत्तरी प्राप्त थी। अंग्रेज़ों ने अपनी नीति के तहत हिन्दुओं को बढ़ाया और मुसलमानों को घटाया। जब समाजी और आर्थिक क्षेत्र में हिन्दू आगे बढ़ गये तो उनको धार्मिक बड़ाई, समझाई और हिन्दुओं को मुसलमानों के साथ वाद-विवाद पर उतार दिया और इसके लिये अवसर भी दिया ताकि हिन्दू मुसलमानों से खुलेआम बहस (मुनाज़रा) करें।

शाहजहांपुर (यू॰पी॰) के समीप चांदपुर गांव में वहां के ज़मींदार प्यारे लाल कबीर पंथी पादरी नौलिस की सरबराही और रॉबर्ट जार्ज कलेक्टर शाहजहांपुर की आज्ञा से 08 मई 1876 ई॰ को एक मेला खुदा शनासी लगाया गया, जिस में ईसाइ, हिन्दू और मुसलमान तीनों धर्मों के सदस्यों को इश्तेहार के द्वारा बुलाया गया कि वह अपने-अपने धर्मों की सच्चाई को सिद्ध करने के लिये आयें। मौलाना मुनीर नानौतवी और मौलवी इलाही बख़्श रंगीन बरेलवी के अतिरिक्त मौलाना अबुल मंसूर देहलवी मिर्ज़ा मोहिद जालंधरी, मौलवी अहमद अली, मीर हैदर देहलवी, मौलवी नोअ़मान बिन लुक़मान भी सम्मिलित हुए। इन तमाम आलिमों ने इस मेले में भाषण दिये और इन का बड़ा प्रभाव हुआ। हज़रत नानौतवी ने तसलीस व शिर्क के ख़िलाफ़ और तौहीद (अद्वैत) के समर्थन में ऐसा भाषण दिया कि जलसे के मुख़ालिफ (विरोधी) व मुवाफ़िक़ (समर्थक) सब मान गये। एक अख़बार लिखता है –'08 मई 1876 ई॰ के जलसे में मौलाना मुहम्मद कासिम साहब ने भाषण दिया और इस्लाम की अच्छाईयां बयान कीं। पादरी साहब ने तसलीस का बयान विचित्र अंदाज़ में बयान किया कहा कि एक ख़त में तीन गुण पाये जो हैं, लम्बाई, चौड़ाई और गहराई तो तसलीस (तीन) हर प्रकार से सिद्ध है। मौलवी साहब ने इस का खंडन उसी समय कर दिया। फिर पादरी साहब और मौलवी साहब भाषणों द्वारा विवाद करते रहे। इसी पर जलसा बर्ख़ास्त (ख़त्म) हो गया। तमाम समीप और दूर चारों और शोर मच गया कि मुसलमान जीत गये। जहां एक इस्लामी विद्वान् खड़ा हो तो उस के आसपास हज़ारों आदमी इकट्ठा हो जाते थे। पहले दिन के जलसे में जो आरोप इस्लाम की ओर से थे उन का जवाब इसाईयों ने कुछ नहीं दिया। मुसलमानों ने इसाईयों के सभी उत्तर दिये और सफलता पाई।''❑❑

नूरे क़ुरआन

(सूरा अल शम्श नं॰ 91)

अनुवाद और व्याख्या : शैख़ुल हिन्द र.अ.

और असफल हुआ जिसने उसको मिट्टी में मिला छोड़ा।

मिट्टी में मिला छोड़ने से तात्पर्य यह है कि मन की बागडोर इच्छाओं और क्रोध के हाथ में दे दे। बुद्धि और अल्लाह के भेजे हुए नियमों से कोई संबंध न रखे, अर्थात् इच्छाओं और लालच के आधीन रहकर मन का दास बन जाये। ऐसा व्यक्ति पशुओं से भी बुरा और अपमानित है।

चेतावनी:- जिस प्रकार अल्लाह ने अपनी तात्विकता से सूरज की धूप और चांद की चांदनी दिन का उजाला और रात का अंधेरा आसमान की ऊंचाई और ज़मीन की निचाई एक दूसरे के मुक़ाबले में बनाई और इंसान के मन में अच्छाई और बुराई की दो शक्तियां एक दूसरे के मुक़ाबले में बनाई और दोनों को समझने और उन पर चलने की ताक़त दी। इसी प्रकार एक दूसरे के विरुद्ध भिन्न-भिन्न कार्यों का प्रतिफल और परिणाम देना भी उसी अल्लाह (तत्वज्ञानी) का काम है। अच्छाई और बुराई इन दोनों कार्यों के भिन्न परिणामों का संसार में पाया जाना भी पैदा करने की हिकमत के आधार पर ऐसा ही उचित है। जैसे अंधेरे और उजाले का पाया जाना। इससे जिन वस्तुओं की कसम खाई गयी है उनमें और जिन वस्तुओं के लिए क़सम खाई गयी है उनमें समानता का पता चलता है।

समूद की क़ौम ने अपनी उद्दण्डता के कारण झुठलाया।

अर्थात् अल्लाह के रसूल हज़रत सालेह को झुठलाया। यह इससे पहली आयत का एक उदाहरण लोगों को नसीहत के लिए बयान किया जा रहा है। सूरा नं॰ 7 रुकू नं॰ 10 में यह घटना विस्तार से आ चुकी है।

जब उनमें का बड़ा अभागा उठ खड़ा हुआ।

यह अभागा कज़ार बिन सालिफ था।

तो उनसे अल्लाह के रसूल ने कहा कि अल्लाह की ऊंटनी से और उस के पानी पीने की बारी से सावधान (ख़बरदार) रहो।

अर्थात् ख़बरदार उसको क़त्ल मत करना और न उसका पानी बन्द करना, पानी का वर्णन इसलिए किया कि प्रत्यक्ष रूप में वह इसी कारण से इसके क़त्ल पर तैयार हुये थे और अल्लाह की ऊंटनी इस आधार पर कहा कि अल्लाह ने उसको हज़रत सालह के रसूल होने का निशान बनाया था और उसका सम्मान ज़रूरी बताया था। यह क़िस्सा पहले सूरा नं॰ 7 रुकू नं॰ 10 में आ चुका है।

सो उन्होंने रसूल को झुठलाया फिर उस ऊंटनी के पांव काट डाले, फिर उनसे पालनहार ने उनके गुनाहों के कारण उनको उलट मारा फिर सबको बराबर कर दिया।

हज़रत सालह ने फरमाया था – इस ऊंटनी को बुराई से हाथ न लगाना, नहीं तो बड़े कष्टों में फंस जाओगे। उन लोगों ने इस बात को झूठ समझा, रसूल को झुठलाया और ऊंटनी को मार डाला। अन्त में वही हुआ जो हज़रत सालह ने कहा था, अल्लाह ने सबको मिटाकर बराबर कर दिया।

रुकू नं॰ 1

और वह पीछा करने से नहीं डरता।

अर्थात् जिस प्रकार दुनिया के बादशाहों को बड़ी जातियों, संघ और जमात को सज़ा देने के पश्चात् यह शंका होती है कि कहीं मुल्क में क्रांति या बग़ावत न हो जाये या देश के शासन चलाने में गड़बड़ न हो जाये। अल्लाह को इन बातों की कोई शंका नहीं हो सकती। ऐसी कौन सी शक्ति है जो अपराधियों का बदला लेने के लिए अल्लाह का पीछा करेगी।

हुस्ने मामलात

हज़रत मुहम्मद बिन मुंकदिर रहमतुल्लाह अलैह चुगों की तिजारत करते थे। उनके पास कुछ चूगे पांच रुपए वाले थे कुछ दस रूपए वाले। उनकी अदमे मौजूदगी में उनके गुलाम ने ग़लती से पांच रुपए वाला चूग़ा दस रुपए में बेच डाला। जब उनको इस बात का इल्म हुआ तो वह दिन भर खरीदार को ढूंढते रहे आख़िर मुलाक़ात हो गई। फरमाया कि गुलाम ने ग़लती से पांच की चीज़ दस में बेच डाली। खरीदार ने कहा कुछ मुज़ायका नहीं। मैं राज़ी हूं। आपने फरमाया तुम राज़ी हो मगर हम तुम्हारे लिए वही बात पसंद करते है जो अपने लिए करते हैं, अब तुम तीन बातों में से एक बात पसंद कर लो।

नम्बर एक : दस रुपए वाला चूग़ा ले लो।

नम्बर दो : पांच रुपए वापस ले लो।

नम्बर तीन : हमारी चीज़ दे दो और अपने दाम वापस ले लो। ख़रीदार ने आपके इसरार से पांच रुपए वापस ले लिए और उस हुस्ने मामलात पर हैरतज़दा होकर दर्याफ़्त किया कि यह कौन शख़्स है? लोगों ने नाम बता दिया तो उसने कहा कि सुब्हानअल्लाह! इन्हीं की बदौलत क़हत साल में हम पर बारिश होती है।

नई करवट लेती दलित राजनीति

डॉ॰ ए.के. वर्मा

बीते दिनों बिहार और उत्तर प्रदेश में घटित घटनाएं दलित राजनीतिक विमर्श में नए रुझान का संकेत करती है। इसमें एक प्रश्न यही उभरा है कि क्या अब दलितों को अस्मिता से अधिक आकांक्षाएं आकर्षित कररही हैं? बिहार में दलित राजनीति की अगुआ मानी जाने वाली लोक जनशक्ति पार्टी में आंतरिक उठापटक चल रही हैं वहीं उत्तर प्रदेश में रामअचल राजभर और लालजी वर्मा जैसे कई दलित नेताओं को मायावती ने पार्टी से निकाल दिया। यह महज़ एक इत्तेफाक़ है या इसके पिछले कोई 'अंडर करेंट' है? विगत 74 सालों में बाबू जगजीवन राम को छोड़ कोई दलित नेता राष्ट्रीय स्तर पर पनप नहीं पाया। उत्तर प्रदेश में मायावती और बिहार में राम विलास पासवान को आंशिक सफलता ही मिली। वैसे मायावती 2007 में प्रभावी 'सोशल इंजीनियरिंग' द्वारा समावेशी राजनीति की ओर क़दम बढ़ाया और सभी वर्गों के वोट से प्रदेश में सरकार बनाई हालांकि अपने प्रयोग को वह बहुत आगे नहीं ले जा सकीं और राष्ट्रीय राजनीति की राह में भटक गई। वहीं पासवान स्वयं निर्वाचित होते रहे, पर बिहार में दलितों को लामबंद नहीं कर सके और पासी समाज तक ही सीमित होकर रह गए। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि कोई दलित नेता राष्ट्रीय स्तर तो दूर अपने प्रदेश में ही पूरी तरह स्थापित क्यों नहीं हो पाता? इसके तीन कारण तो बिल्कुल स्पष्ट हैं।

पहला यही कि दलित समाज बेहद विभक्त है। उसकी आंतरिक सामाजिक संरचना में उतरना ही भेदभाव है जितना बाह्य समाज में। जाटव और पासी, पासी और वाल्मीकि, वाल्मीकि और डोम और ऐसे ही अनेक दलित समुदाय एक मंच पर नहीं आते। अधिकांश विमर्श दलित बनाम ग़ैर दलित पर ही केन्द्रित रहता है। विश्लेषक 'दलित राजनीति' की बात करते हैं, क्योंकि उनके विश्लेषण ग़लत हो जाते हैं, क्योंकि वे दलितों को समरूप समाज मानकर चलते हैं। कोई भी दलित या ग़ैर दलित नेता दलितों की आंतरिक सामाजिक संरचना की पदसोपानीयता और विसंगतियों को नहीं उठाता। जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक 'दलित राजनीति' केवल सहयोगी राजनीति के रूप में ही क्रियाशील हो पाएगी, 'स्वायत्त राजनीति' के रूप में नहीं।

दूसरा कारण यही है कि दलित समाज की आंतरिक पदसोपानीयता उसे समरूप समाज के रूप में लामबंद नहीं होने देती। यदि उ.प्रदेश में जाटव केन्द्रित दलित राजनीति है तो बिहार में पासी या मुसहर केन्द्रित। पंजाब में सर्वाधिक 32 प्रतिशत दलित हैं, लेकिन कोई दलित राजनीति की बात नहीं करता? कांशीराम तो होशियारपुर, पंजाब से थे। फिर भी वह वहां दलितों में पैठ नहीं बना सके? कारण स्पष्ट है कि वहां दलित समाज वाल्मिकी, रविदासी, कबीरपंथी, मज़हबी सिख आदि में बंटे हुए हैं, जिनमें रोटी-बेटी का संबंध भी नहीं होता। क्या ऐसे विभक्त समाज में दलितों को लामबंद कर 'अस्मिता' आधारित राजनीति हो सकती है? क्या इसीलिए मायावती को पंजाब में आगामी विधानसभा चुनाव के लिए अकाली दल के साथ गठबंध न करना पड़ा? संभवत: इसी कारण भाजपा ने तुरुप का पत्ता चला है। भाजपा ने राज्य में दलित मुख्यमंत्री बनाने की घोषणा की है। यदि दलितों की राजनीतिक लामबंदी और सशक्तीकरण से उनके आंतरिक सामाजिक भेदभाव को ख़त्म किया जा सके तो यह घाटे का सौदा नहीं होगा।

तीसरा पहलू यही है कि दलित राजनीति स्वभाव से ही अस्मिता अर्थात् 'पहचान की राजनीति' को स्वीकार करती है। किसी दल पर जब यह ठप्पा लग जाता है कि वह दलित अस्मिता को ही तरजीह देता है तो समाज के अन्य वर्ग उससे कटने लगते हैं। इससे समावेशी राजनीति की संभावना ख़त्म हो जाती है। मायावती ने यह मिथक 2007 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में तोड़ा जब उन्होंने सोशल इंजीनियरिंग द्वारा 'सैंडविच' गठबंधन बनाया। इसमें उन्हें सैंडविच के दो छोर की तरह न केवल ब्राह्मणों और दलितों का समर्थन मिला, वरन अंदरूनी फिलिंग के रूप में समाज के अन्य वर्गों का भी समर्थन मिला। हार्वर्ड विश्वविद्यालय में व्याख्यान के दौरान मायावती की सोशल इंजीनियरिंग के प्रति मुझे श्रोताओं में काफी उत्सुकता, आशा और रोमांच दिखा। उनमें मायावती को भावी राष्ट्रीय नेता के रूप में देखने की इच्छा थी, लेकिन मायावती अपनी सोशल इंजीनियरिंग को आगे न ले जा सकीं। वह अस्मिता की राजनीति और

बाक़ी पेज 11 पर

वाजपेयी सरकार में सभी मंत्री थे और अब मोदी सरकार में सभी कर्मचारी

वरिन्द्र कपूर

मंत्रिमण्डल में फेरबदल से भारतीय जनता पार्टी ने अपना लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों की ओर साधा है जबकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पारंपरिक राजनेताओं पर पेशेवर लोगों को तरजीह दी हैं पिछले दिनों दिनों हुए इस फेरबदल से प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी छाप को प्रकट किया है। अपनी व्यापकता में इस फेरबदल ने सभी को आश्चर्यचकित किया है इससे केवल वे लोग ही आश्चर्यचकित नहीं हुए जिन्हें मंत्रिमंडल में शामिल किया गया बल्कि वे भी हैरान हुए होंगे जिन्हें निर्दयता से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया है।

एक दर्जन वरिष्ठ तथा जूनियर मंत्रियों को हटा देना अपनी तरह का एक रिकॉर्ड होगा। एक तरह से यह मंत्रियों पर की गई सर्जिकल स्ट्राईक ही है। इसके बारे में किसी भी व्यक्ति को आभास नहीं था जिस तरह से एक बड़े स्तर पर हिलजुल की गई। कुछ समय से मंत्री पद खाली पड़े थे। ऐसा भाजपा के सहयोगियों के बाहर होने के बाद हुआ था। कुछ मंत्रियों के पास तो दोहरे या फिर तिहरे चार्ज भी थे।

मीडिया ने भी अश्विनी वैष्णव के मंत्रिमण्डल में शामिल होने पर ज़्यादा ध्यान दिया क्योंकि उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी संचार तथा रेलवे का पदभार संभाला है। रवि शंकर प्रसाद के स्थापन के तौर पर उन्हें लाया गया जो कम बोलते हैं मगर उनसे बड़े की आशा की जाती है।

अपनी पार्टी में पारंपरिक राजनीतिज्ञों से ज़्यादा मोदी सरकार पेशेवर लोगों में ज़्यादा भरोसा रखते हैं। वैष्णव पूर्व में एक आई.ए.एस. अधिकारी रहे हैं। उसके बाद वह एक प्राइवेट उद्यमी बने और इस बीच उन्होंने प्रतिष्ठित वाहर्टन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट से डिग्री हासिल की। उन्हें प्रभावी रूप से टवीटर के साथ उपजे गतिरोध को निपटाना है मगर क्या वह रेलवे में एक बदलाव लाएंगे और सूचना प्रौद्योगिकी और संचार में एक प्रमुख व्यवसायी घराने का प्रभाव बेअसर करेंगे?

वैष्णव के साथ-साथ मंत्रिमंडल में आधा दर्जन ऐसे भी मंत्री हैं जिनकी पृष्ठभूमि नौकरशाही की रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रधानमंत्री को राष्ट्र को पेश आ रही विशाल चुनौतियों से निपटने के लिए अपनी क्षमताओं पर पूरा भरोसा है। वह एक प्रमुख कार्यकारी अधिकारी की तरह राष्ट्र के मामलों का प्रबंधन करना चाहते हैं। यही कारण है कि महत्वपूर्ण पदों पर नौकरशाहों की गिनती ज़्यादा है। 140 करोड़ से ज़्यादा लोगों की आबादी वाले एक राष्ट्र में विविध तथा उलझे हुए हित हैं।

विभिन्न जातियों की भागीदारी तथा क्षेत्रीय हितों को देखना एक ज़रूरत थी इसीलिए ऐसी बातों को गृह मंत्री अमित शाह पर छोड़ दिया गया जो मंत्रियों की लॉटरी में विजेता को अकेले ही चुन सकते हैं। यह उल्लेखनीय है कि सत्ताधारी पार्टी के प्रबंधकों ने 27 ओ.बी.सी., 12 अनुसूचित जाति और 08 अनुसूचित जनजातीय लोगों को मोदी की टीम में शामिल किया। नि:संदेह इन लोगों का मंत्रिमंडल में शामिल होना एक ज़रूरी चुनावी मजबूरियां भी थीं। सबसे बड़ी चुनावी लड़ाई उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड तथा पंजाब इत्यादि राज्यों में अगले वर्ष

बाक़ी पेज 11 पर

अब लाइसेंस के लिए ड्राइविंग टेस्ट की ज़रूरत नहीं

ड्राइविंग लाइसेंस के लिए केन्द्रीय परिवहन मंत्रालय द्वारा नियम में किए गए एक नए संशोधन के अनुसार, अब दिल्लीवासियों को ड्राइविंग टैस्ट के लिए आरटीओ जाने की आवश्यकता नहीं है। इसमें कहा गया है कि लाइसेंस प्राप्त करने के लिए ड्राइविंग टेस्ट पास करना अनिवार्य नहीं है। रीजनल ट्रांसपोर्ट ऑफिस (आरटीओ) में लाइसेंस हासिल करने के लिए ड्राइविंग टेस्ट पास करने की कोशिश के दौरान घबराते हुए लाइन में खड़े होने के दिन अब लद गए। दिल्लीवासियों को अब इस संघर्ष से गुज़रने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि केन्द्रीय परिहवन मंत्रालय द्वारा नियम में किए गए नए संशोधन में कहा गया है कि लाइसेंस प्राप्त करने के लिए ड्राइविंग टेस्ट पास करना अनिवार्य नहीं है। राजधानी में कई लोग इस क़दम को एक राहत का क़दम के तौर पर देख रहे हैं, लेकिन जीवन को आसान बनाने के लिए जो बदलाव किया गया है, उसके अन्य परिणाम भी होने का अनुमान लगाया जा रहा है।

अब आपका लाइसेंस प्राप्त करना आसान हो सकता है। हालांकि, सड़कों पर वाहन चलाने वाले लोगों की संख्या 'डरावनी' है। पटपड़गंज की एक उद्यमी कहती हैं कि इस नियम से सड़क पर एक अराजक स्थिति उत्पन्न होने जा रही है। मैं इससे पहले से ही डरी हुई हूं क्योंकि मुझे हर दिन काम से बाहर निकलना होता है और अनलॉक में अब सब ही रोड पर आ गए हैं। यह इतना जोखिम भरा है क्योंकि लाइसेंस प्राप्त करना बहुत आसान हो गया है। कुछ दिल्लीवासियों को उम्मीद है कि नया नियम और स्थापित की जा रही प्रणाली ड्राइवरों को और अधिक ज़िम्मेदार बनाकर ट्रैफिक को कंट्रोल करने में मदद करेगी। उन्होंने कहा कि इसमें कुछ एकरूपता होनी चाहिए ताकि सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवेदक का ड्राइविंग स्किल लेवल एक निश्चित सीमा से ऊपर हो। पहले कई आरटीओ थे और उपलब्ध स्थान और संसाधनों के अनुसार सभी का ड्राइविंग टेस्ट होता था फिर भी कुछ लोग उचित टेस्ट के लिए हाज़िर हुए बिना ड्राइविंग लाईसेंस हासिल कर सकते हैं, इसलिए ड्राइविंग नियम नहीं बल्कि ड्राइवरों को अपडेट होने की आवश्यकता है।

अब जिन प्रशिक्षण केन्द्रों को अनुमति दी जाएगी, उनके लिए सिमुलेटर और एक डेडिकेटिड ड्राइविंग टैस्ट ट्रैक की ज़रूरत होगी। इस पर एक ड्राइविंग स्कूल मालिक का कहना है कि इस फैसले ने उन्हें मुश्किल में डाल दिया है। अधिकारियों ने टैस्ट के लिए दो एकड़ का ट्रैक मांगा है और हम इसकी व्यवस्था नहीं कर सकते और अगर ऐसा है तो हमारे और अन्य छोटे ड्राइविंग स्कूलों में कोई नहीं आएगा। हमारा इस व्यवसाय में टिके रहना कठिन होता जा रहा है। देखते हैं कि क्या हम कारोबार को जारी रखने में सक्षम हैं या बदलने की आवश्यकता है।

एक अन्य ड्राइविंग स्कूल के मालिक ने कहा कि केवल ड्राइविंग स्कूल में ट्रेनिंग और लाइसेंस प्राप्त करना स्वतंत्र रूप से ड्राइविंग शुरू करने के लिए काफी नहीं है। ड्राइविंग के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। बहुत बार लोग ड्राइविंग स्कूलों से ड्राइविंग सीखते हैं, लेकिन फिर भी वे सड़क पर गाड़ी चलाने के लिए तैयार नहीं होते। ड्राइविंग स्कूल में बस बेसिक्स क्लियर होते हैं, ऑन-रोड एक्सपीरियंस तो चाहिए। इसलिए किसी भी ट्रेनिंग के बाद ऑन-रोड टेस्ट होना चाहिए।❑❑

58 की उम्र में मेडल जीतकर मिसाल बने अलरशीदी

उम्र के जिस पड़ाव पर लोग अक्सर रिटायर्ड ज़िन्दगी की योजनाएं बनाने में मसरूफ होते हैं, कुवैत के अब्दुल्ला अलरशीदी ने तोक्यो ओलंपिक्स में शूटिंग में ब्रॉंज मेडल जीतकर दुनिया को दिशा दिया कि उनके लिए उम्र महज़ एक आंकड़ा है। सात बार के ओलम्पियन ने पुरुषों की स्कीट स्पर्धा में मेडल जीता। यही नहीं मेडल जीतने के बाद उन्होंने 2024 में पैरिस ओलिपिम्क्स में गोल्ड पर निशाना लगाने का भी वायदा किया जब वह 60 पार कर चुके होंगे। उन्होंने असाका शूटिंग रेंज पर मेडल जीतने के बाद कहा 'मैं 58 वर्ष का हूं। सबसे बूढ़ा निशानेबाज़ और यह ब्रांज मेरे लिए गोल्ड से कम नहीं। मैं इस मेडल से बहुत खुश हूं लेकिन उम्मीद है कि अगले ओलंपिक्स में गोल्ड जीतूंगा। पैरिस में! अलरशीदी ने पहली बार 1996 अटलांटा ओलिंपिक्स में भाग लिया था। उन्होंने रियो ओलंपिक्स 2016 में भी ब्रॉंज जीता था लेकिन उस समय स्वतंत्र खिलाड़ी के तौर पर उतरे थे। कुवैत पर अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक कमिटि ने बैन लगा रखा था। उस समय अल रशीदी आर्सनल फुटबॉल क्लब की जर्सी पहनकर आए थे।

तोक्यो 2020 के आयोजकों का ओलिंपिक्स मेडल को लेकर किया गया एक टवीट बहुत वायरल हुआ। आयोजकों ने एक तस्वीर पोस्ट की है जिसमें एक एथलीट हंस रहा है और अपने गोल्ड मेडल को मुंह से काट रहा है।

इस तस्वीर को पोस्ट कर आयोजकों ने लिखा, 'हम आधिकारिक रूप से इस बात की पुष्टि करना चाहते हैं कि टोक्यो 2020 के मेडल मुंह में नहीं रखे जा सकते हैं। हमारे मेडल इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को रीसाइकल कर बने हैं जिसे जापान की जनता ने दान दिया था। आप इसे मुंह से काट नहीं सकते लेकिन हमें पता है कि आप फिर भी ऐसा करेंगे और प्रशासकों आयोजकों के इस कैची लाइन की जमकर सराहना कर रहे हैं।

13 वर्ष की मोमिजी ओलंपिक्स चैम्पियन

स्केटबोर्डिंग में हैरतअंग्रेज करबत दिखाकर 13 वर्ष की दो बच्चियों ने तोक्यो ओलिंपिक्स में गोल्ड और सिल्वर मेडल जीत लिए, जबकि ब्रांज मेडल जीतने वाली भी 16 वर्ष की प्रतियोगी थी। आमतौर पर जिस आयु में बच्चे खिलौनों या वीडियो गेम से खेलते हैं, इन लड़कियों ने कड़ी मेहनत से तमाम चुनौतियों का सामना करके पुरुषों के इस खेल पर दबदबे को तोड़ा है। दूसरे स्थान पर रही रेसा भी 13 वर्षीय ही हैं। जापान की मोमिजी निशिया ने पहला ओलिंपिक्स खेलते हुए पीला तमगा अपने नाम किया। अब तक पुरुषों के दबदबे वाले इस खेल में लड़कियों के इस यादगार प्रदर्शन ने खेल का भविष्य उज्जवल कर दिया है। सिल्वर मेडल ब्राजील की रेसा लीला को मिला जो 13 वर्ष की ही हैं। वहीं ब्रांज मेडल जापान की फुना नाकायामा को मिला। बीस प्रतियोगियों के महिला वर्ग में ब्राजील की लेतिसिया बुफोनी भी थी जिनके पिता ने उन्हें खेल से रोकने के लिए उनका स्केटबोर्ड दो हिस्सों में तोड़ दिया था। कनाडा की एनी गुगलिया जब स्केटिंग सीख रही थीं तो पहले दो वर्ष कोई और लड़की उनके साथ नहीं थी।

दुनिया के कई देशों में स्केटबोर्डिंग की लोकप्रियता देखते हुए इसको ओलिंपिक्स में पहली बार शामिल किया गया है। इसमें चार इवेंट हैं। पुरुष वर्ग में दो और महिला वर्ग में दो इवेंट है। दोनों में पार्क और स्ट्रीट इवेंट को ओलंपिक्स में शामिल किया गया है।

भारत लौटने पर मीराबाई चानू का भव्य स्वागत

टोक्यो ओलंपिक्स में रजब पदक जीतने के बाद भारत लौटने पर दीवानगी की हद तक मिल रहे प्यार और स्वागत समारोहों से मीराबाई चानू न तो परेशान और न ही हैरान है। हां, एक बात पर उन्हें अब तक विश्वास नहीं हो रहा है, वो है पदक जीतने के बाद टोक्यो में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सीधे उनके मोबाइल फोन पर फोन करना। मीरा का कहना है कि वह ज़िन्दगीभर इस यादगार क्ष्ज्ञण को नहीं भूलेंगी।

मीरा ने कहा प्रधानमंत्री का फोन आना उन्हें अब तक सपने जैसा लग रहा है। थोड़ी देर तक उन्हें ऐसा लगा कि क्या सचमुच पीएम सर से बात हो रही है, पर जब उन्होंने कहा मीरा आपने कमाल कर दिया। पहले दिन ही पदक जीतकर देश का नाम ऊंचा कर दिया बेटी। मीरा कहती हैं कि उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी, कि पीएम फोन कर उनका हौंसला बढ़ाएंगे।

इतिहास रच कर घर लौटी बेटी को मां ने गले से लगा लिया। मीराबाई जब अपने घर इंफाल पहुंची जहां मां साइखोम ओंगबी तोम्बी को देखकर उनकी आंखों से आंसू निकल पड़े। मां ने भी ओलंपिक में इतिहास रचकर लौटी बेटी को गले से लगा लिया। मीरा के कानों में ओलंपिक रिंग वाले बुंदे चमक रहें थे जो मां ने अपने जेवर बेचकर बेटी को बनवा कर दिए थे। पिता साइखोम कृति मेतई भी बेटी को मेडल के साथ देख गौरान्वित थे।

मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने मीराबाई का अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री ने स्टार भारोत्तोलक को एक करोड़ रूपये का चेक और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (खेल) का नियुक्ति पत्र भी सौंपा। समारोह में मीराबाई की बचपन के कोच अनीता चानू और ब्रोजेन का भी स्वागत किया गया।

शॉर्ट एक्सरसाइज के ये 4 तरीके फिट रहने को 4 मिनट भी काफी

यदि आपके पास 5 से 10 मिनट का भी समय है तो आप जिम में घंटों पसीना बहाने के बराबर इन 5 से 10 मिनट की बड़ा आराम। इन छोटी छोटी एक्सरसाइज से शरीर पर बड़ा प्रभाव डाला जाता है।

दस मिनट वर्कआउट

यदि आपको साइकिल चलाना, दौड़ना अथवा तैरना पसंद है तो यह 10 मिनट का वर्कआउट ऑप्शन आपके लिए बहुत फायदेमंद हो सकता है। **सिर्फ 7 स्टेप्स में**

1. सबसे पहले दो मिनट वार्मअप करें। 2. अब पूरी क्षमता के साथ 20 सेकेंड तक या तो पैडलिंग करें या दौड़ें या तैरें। यानि जो एक्टिविटी सबसे ज़्यादा पसंद हो, उसे कर सकते हैं।

3. अब दो मिनट के लिए अपनी रफ्तार को आराम दें। धीरे धीरे एक्सरसाइज करते रहें।

4. अब दोबारा 20 सेकंड तक पूरी क्षमता के साथ पैडल मारें, दौड़ें या स्विमिंग करें।

5. इसके बाद दोबारा 02 मिनट का गैप लें। धीरे-धीरे मनपसंद एक्सरसाइज करते रहें।

6. अब फिर से 20 सेकेंड तक पूरी क्षमता से पैडल मारें, दौड़ें अथवा तैरें। यानि 20-20 सेकेंड के तीन स्टेप में तेज गति से एक्सरसाइज करनी है और दो-दो मिनट के तीन राउंड में हल्की एक्सरसाइज करनी है।

7. अब 3 मिनट तक खुद को कूल डाउन करें। इस तरह दस मिनट में ये 7 स्टेप पूरे हो जाएंगे।

सात मिनट वर्कआउट

सिर्फ बारह स्टेप्स में

1. यह 12 स्टेप एक्सरसाइज प्लान है। हर एक्सरसाइज को 30 सेकंड तक करने के बाद 10 सेकेंड का आराम करना है।

2. एक्सरसाइज का सीक्वेंस इस तरह होगा।

सबसे पहले जम्पिंग जैक यानि दोनों हाथों और पैरों को एक साथ खोलकर कूदिए और वापस पहले वाली पोजीशन में आ जाइए।

इसके बाद वॉल सिट। दीवार का सहारा लीजिए। घुटने मोड़िए और चेसर पोजीशन में बैठ जाइए।

अब 30 सेकंड पुशअप्स फिर एब्डॉमिनल क्रंचेज करिए। इसके बाद चेयर पर स्टेपअप और स्क्वॉट्स करिए। कुर्सी पर ट्राइसेप्स डिप्स, प्लैक, हाई नी अथवा एक स्थान पर दौड़, अल्टरनेटिंग लंजेज, रोटेशन में पुशअप्स और दोनों तरफ साइड प्लैंक करिए।

चार मिनट वर्कआउट

यदि आप अपनी 90 प्रतिशत क्षमता के साथ सप्ताह में तीन बाद 10 सप्ताह तक यह एक्सरसाइज करते हैं तो ब्लड शुगर और ब्लड प्रेशर कंट्रोल कर सकते हैं। **सिर्फ तीन स्टेप में**

1. सबसे पहले हल्का वार्मअप करें। 2. अब 4 मिनट तक पूरी क्षमता के साथ दौड़ें, तैरे अथवा साइकिल चलाएं। यानि जो भी आपको पसंद हो, वह एक्सरसाइज एक्टिविटी करें।

3. अब रुकें। सांसों को कंट्रोल करें। इसे सप्ताह में तीन बार करें।

10-20-30 ट्रेनिंग

ट्रेनिंग का यह तरीका आपके हृदय की क्षमता को बढ़ाता है। चाहे तो दौड़ सकते हैं अथवा साइकिलिंग कर सकते हैं।

1. 30 सेंकंड तक हल्की गति के साथ दौड़ना शुरू कर दें। बीस सेकेंड के बाद 10 सेकेंड तक पूरी क्षमता के साथ दौड़ें। इस सीक्वेंस को 5 बार दोहराएं। 2 मिनट का रेस्ट करें। फिर इस सीक्वेंस को 5 बार दोहराए।

लम्बे और स्वस्थ जीवन की विज्ञान आधारित 4 आदतें

ग्रीन-टी का उपयोग करें

अध्ययनों में यह सामने आ रहा है कि जिन लोगों को डायबिटिज हैं वो अगर कॉफी या ग्रीन टी पीना शुरू करते हैं तो वे असामयिक मृत्यु से बच सकते है। यह रिसर्च 5000 लोगों पर पांच सालों तक किया गया। जिन्हें डायबिटीज नहीं है उनके लिए भी ग्रीन टी और कॉफी काफी फायदेमंद होती है। कॉफी और ग्रीन टी में कई ऐसे प्लांट कम्पाउंड होते हैं जिनके एंटी इंफ्लामेटरी और एंटी ऑक्सीडेंट गुणों के कारण यह सेहत के लिए अच्छी होती है।

दौड़िए कई बीमारियों से बचेंगे

डब्ल्यूएचओ ने सप्ताह में कम से 75 मिनट तेजी से रनिंग,

बाक़ी पेज 11 पर

पेगासस एक खतरनाक वायरस, विपक्षी आंधी चलेगी तो पूरे देश में 'खेला होबे'

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा है कि अगर राजनीतिक आंधी चली तो कोई उसे रोक नहीं पाएगा। उन्होंने कहा कि अब 'खेला होबे' की गूंज पूरे देश में सुनाई देगी। ममता ने कहा कि अब हम सच्चा दिन देखना चाहते हैं, बहुत दिन अच्छे दिन का इंतज़ार किया है। संवाददाताओं से बातचीत में ममता बनर्जी ने कहा कि मेरे सभी विपक्षी नेताओं के साथ अच्छे संबंध हैं, अगर राजनीतिक आंधी चली तो कोई उसे रोक नहीं पाएगा। बंगाल की मुख्यमंत्री ने कहा कि अब 'खेला होबे' की गूंज पूरे देश में सुनाई देगी। ममता बनर्जी के दिल्ली दौरे को मिशन 2024 से जोड़ कर देखा जा रहा है। विपक्षी एकता पर ममता बनर्जी ने कहा कि ये पूरा सिस्टम राजनीतिक पार्टियों पर निर्भर करता है, अगर कोई लीड करता है तो मुझे कोई दिक्कत नहीं है। मैं किसी पर अपना ओपिनियन नहीं थोपना चाहती हूं। ममता ने कहा कि अभी कई राज्यों में विधानसभा चुनाव होने वाला है, हम संसद सत्र के बाद सभी राजनीतिक दलों के साथ मिलकर बात करेंगे।

शेष.... प्रथम पृष्ठ

में पाकिस्तान का सीधा प्रभाव बढ़ेगा और इससे ईरान के हित प्रभावित होंगे।

चीन भी अफ़ग़ानिस्तान में सक्रिय हो गया है। वह अपने हित देख रहा है। चीन के स्वायत क्षेत्र शिनजियांग में सक्रिय उइगर अलगाववादियों के तालिबान और अलक़ायदा से करीबी संबंध है। चीन की सीमा भी अफगानिस्तान से मिलती है। इसलिए चीन को आशंका है कि अगर तालिबान काबुल को नियंत्रित करने का में सफल हो गया तो उइगुर अलगाववादियों का मनोबल बढ़ेगा। चीन अफग़ानिस्तान में सैन्य अड्डा बनाने पर भी विचार कर रहा है। इसके अलावा यह अफगानिस्तान में आर्थिक निवेश और तेज़ करने की योजना बना रहा है। दरअसल तालिबान चीन की सबसे महत्वपूर्ण परियोजना बेल्ट एवं रोड इनीशिएटिव में भी बाधा बन सकता है। ऐसे हालात में अफग़ान सरकार, तालिबान और अपने हितों को देश कर विदेशी मुल्क अफगानिस्तान को कहां पहुंचाएंगे, यह वक्त ही बताएगा।❑❑

शेष.... अफ़ग़ानिस्तान में क्या करे भारत

ख़तरे में हैं। भारत ने हेरात में बांध बनाने से लेकर कृषि विकास के क्षेत्र में पहल करने के अलावा अफग़ानिस्तान के संसद परिसर का जो निर्माण किया है, उन्हें काबुल में लोकतंत्र और विकास के लौटने तक उम्मीद भरी ख़ामोशी में खड़ा रहना चाहिए। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने अब यह कहा है कि अमेरिका अफगानिस्तान में 'राष्ट्र निर्माण' के लिए नहीं आया था। अमेरिका ने अपने 2,500 लोगों को खोने और दस खरब डॉलर ख़र्च करने के बाद यह स्वीकारोक्ति की है इसलिए, अमेरिका या किसी और के कहने पर या 'हाइब्रिड' युद्ध के हिस्से के रूप में अफ़ग़ानिस्तान में सैन्य उपस्थिति जताने का कोई भी भारतीय प्रयास व्यर्थ और जोखिम भरा ही होगा। लिहाज़ा अफगानिस्तान के मामले में लंबे कूटनीतिक अनिश्चय को उसे स्वीकार कर लेना चाहिए।❑❑

शेष.... स्पेस प्रोग्राम में ....

क्या किया जा सकता है..?

जवाब:- भारत ने स्पेस प्रोग्राम बहुत लेट शुरू किया। हमारा आर्यभट 1975 में गया था और कहां 1958 में रूस और अमेरिका मून की ओर सैटेलाइट भेज चुके थे। चीन भी लेट स्टार्ट हुआ लेकिन आज की तारीख में वह फाइनंशियली बहुत मजबूत है। उसका टेक्निलॉजिकल प्रोग्राम बाकियों से बहुत अच्छा है। लेकिन यह भी नहीं कह कह सकते कि हम चीन से बहुत पीछे हैं। चीन और अमेरिका को हम टक्कर दे ही रहे हैं। मुख्य दिक्कत यह है कि हमने अपने इंस्ट्रूमेंटेशन और कंपोनेंट्स आदि बनाने शुरू नहीं किए हैं।❑❑

शेष.... शॉर्ट एक्सरसाइज.....

साइकिलिंग और स्वीमिंग जैसे ऐरोबिक एक्सरसाइज करने के लिए कहा हैं कई लोग रोज़ाना 35 मिनट वॉक या जॉगिंग को कहते हैं लेकिन पिछले वर्ष ब्रिटिश में एक शोध में बताया गया कि आप रोज़ दौड़िए। भले ही कम या ज़्यादा क्योंकि थोड़ा दौड़ने की आदत भी व्यक्ति के किसी भी कारण से होने वाली मौत के ख़तरे को कम कर देती है।

रोज़ थोड़ा सा ड्राई फ्रूट

एक शोध में बताया गया है कि रोज बादाम, अखरोट, पिस्ता जैसे नट्स खाने की आदत जीवन में मौत के ख़तरे को कम करती है। अभी तक माना जाता था नट्स का सबसे ज़्यादा फायदा दिल को होता है लेकिन इस अध्ययन में बताया गया कि नट्स व्यक्ति को कैंसर, स्ट्रोक, सांस की बीमारी, दिमाग़ की बीमारी आदि से भी बचाता है।

खानपान में सब्ज़ियां भी लें

एक रिसर्च में बताया गया है कि प्लांट बेस्ड फूड को डाइट में शामिल करने से कार्डियोवैस्कुलर डेथ का ख़तरा 32 प्रतिशत तक कम हो जाता है। प्लांट बेस्ट डाइट का मतलब सिर्फ फल और सब्जियां नट्स, सीडस ऑइल, होल ग्रेन, बीन्स आदि भी इसी श्रेणी में आते हैं।❑❑

शेष.... तपती धारती.....

वहीं पर मध्यमवर्गीय, निम्न वर्गीय, और निम्न वर्गीय परिवार बारहों महीने मौसम के अनुकूल साधन सुविधाएं जुटाने में ही लगे रहते हैं। जिसके पास साधन सुविधाएं जुट गईं, वह तो मौसम का सामना कर लेता है, लेकिन जिसके पास नहीं जुट पाती हैं, वह किसी तरह धूप के सहारे ठंड का सामना करता है। ठंड ही क्यों, गर्मी और बरसात के महीनों में भी ऐसे लोग किसी तरह खुद को बचाते देखे जा सकते हैं। ग्लोबल वार्मिंग का असर शहरी ग़रीब और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वालों पर सबसे ज़्यादा पड़ रहा है। वहीं पर कृषि, बाग़वानी पर असर पड़ने की वजह से किसानों की हालात लगातार शोचनीय होती जा रही है, जिससे गांवों से शहर की ओर पलायन बढ़ रहा है और किसानों द्वारा आत्महत्या की घटनाएं बढ़ती जा रही है। किस तरह ग्लोबल वार्मिंग के असर से जीवन, धरती और प्राकृतिक संसाधनों को बचाया जाए, यह बहुत बड़ी चुनौती है। विकसित और विकासशील देशों की सरकारें अपने सामर्थ्य के मुताबिक लोगों को सुरक्षा देने और सचेत करने का कार्य कर रही है, लेकिन प्राकृतिक आपदाओं से पड़ने वाले असर को पूरी तरह समाप्त करना मुमकिन नहीं दिखाई दे रहा है। हां, ग्रीन हाऊस गैसों को कम कर और प्राकृतिक संसाधनों के मनमाने दोहन से बढ़ती समस्याओं से लोगों को सचेत, आने वाले वक़्त को कुछ बेहतर बनाया जा सकता है।❑❑

शेष.... नई करवट लेती दलित राजनीति

समावेशी राजनीति में समन्वय न कर सकीं। दलितों को लगा कि उनकी 'अपनी' सरकार बनने के बावजूद वे सत्ता से बाहर हो गए, क्योंकि मायावती नके ब्राह्मणों, मुस्लिमों आदि को सत्ता में ज़्यादा भागीदारी दे दी थी। वहीं से दलितों का 'अस्मिता' से मोहभंग हो गया और उन्हें अपनी आकांक्षाएं अधिक महत्वपूर्ण लगने लगीं। पिछले एक डेढ़ दशक में यह प्रवृत्ति बढ़ी है और आज दलित समाज अस्मिता से ऊब चुका है। उसे अब अपनी आकांक्षाएं पूरी करनी है।

इससे भारतीय राजनीति में नई संभावनाएं बनी हैं। दलित समाज ने अतीत में जैसे कांग्रेस को छोड़ा, उसी की पुनरावृत्ति वह आज दलित पार्टियों के साथ कर रहा है। कांग्रेस में दलितों की न कोई पहचान थी न ही सत्ता में भागीदारी, न ही नेतृत्व में कोई प्रतिनिधित्व। दलित पार्टियाँ सत्ता से कोसों दूर हैं। यानि वे दलित आकांक्षाओं की पूर्ति करने में असमर्थ हैं। इसी कारण दलित समाज और राजनीति में कशमकश है जिससे आज का दलित सत्ता की कुञ्जी रखने वाले दल भाजपा की ओर आकृष्ट हो रहा है। देश में एक 'भाजपा सिस्टम' उभर रहा है जो सत्ता पर वैसा ही एकाधिकार चाहता है जैसा कभी कांग्रेस का था

अभी तक दलों की सोच थी कि दलितों का सामाजिक सशक्तीकरण होगा तो उनका राजनीतिक सशक्तीकरण स्वत: हो जाएगा। भाजपा ने इस सोच को उलट दिया हैं वह दलितों के राजनीतिक सशक्तीकरण से ही उनका सामाजिक सशक्तीकरण करना चाहती है। इससे न केवल उनका राजनीतिक सामाजिक सशक्तीकरण होगा वरन् भाजपा मज़बूत होगी और हिन्दू समाज के विभाजन की प्रवृत्ति भी घटेगी। इस प्रयोग से आज उ.प्र. के लगभग सभी दलित विधायक और दलित सांसद भाजपा के हैं, जो प्रमाणित करता है कि दलित राजनीति करवट ले चुकी है और अस्मिता की दीवार तोड़ दलित आकांक्षाएं हिलौरे मार रही है।❑❑

शेष.... वाजपेयी सरकार में ....

चलने वाली है। राज्यसभा में सीटों को बढ़ाने के लिए यू.पी. पर पकड़ रखना बेहद लाज़िमी है। हिंदी भाषा के गढ़ में मतदाताओं का समर्थन पाना ज़रूरी है।

उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य में जाति और क्षेत्र महत्वपूर्ण पहलू हैं। महत्वपूर्णक तरीक़े से गैर यादव ओ. बी.सी. सूचि में अपना प्रभाव बनाए हुए हैं जबकि अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के बीच छोटी जातियों पर भी ध्यानपूर्वक लक्षित किया गया है।

इसीलिए उत्तर प्रदेश से दलित, लोध ओ.बी.सी., कोरी शामिल किए गए हैं। इसी तरह बिहार से भी दिवंगत राम विलास पासवान के छोटे भाई पशुपति पारस को भी शामिल किया गया है। एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम जिस पर ध्यान नहीं दिया गया वह आर.एस.एस.-भाजपा के चुनावी क्षेत्र में निश्चित बदलाव है। वाजपेयी अडवाणी के समय से ही संघ परिवार के पारंपरिक समर्थन आधार पर अभी भी लक्ष्य केन्द्रित है जो कि ब्राह्मण, बनिया तथा शहरी मध्यम वर्ग के रूप में है। आप शायद ही शहरी भारत में मध्यम श्रेणी की कालोनियों में एक आर.एस.एस. की शाखा देखेंगे मगर इन्हें तमिलनाडु तथा पंजाब जैसे राज्यों को छोड़कर ग्रामीण क्षेत्रों में भी अधिक गिनती में देखा जा सकता हैं मोदी ने मंत्रियों को अपने संबंधित कार्यालयों से समय पर रिपोर्ट करने की ज़रूरत पर बल दिया है। अटल बिहारी वाजपेयी और मोदी सरकार के सदस्य होने के अंतर के बारे में पूछे जाने पर हमारे वरिष्ठ मंत्रियों में से एक की प्रतिक्रिया कुछ ऐसी थी, ''वाजपेयी सरकार में सभी मंत्री थे और मोदी सरकार में अब सभी कर्मचारी हैं हम अपने कंधों को देखते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि हम अपने बॉस को नाराज़ कर दें।'❑❑

शेष.... मंज़र पस-मंज़र

होती हैं और येदियुरप्पा के शासनकाल को कर्नाटक में किसी दूरगामी शासकीय फैसले के लिए नहीं किया किया जाएगा। उनके पुराने कार्यकाल में भ्रष्टाचार के कुछ प्रकरणों और बेल्लारी ब्रदर्स को लेकर काफी विवाद खड़ा हुआ था और अंतत: उन्हें पद छोड़ना पड़ा था। मौजूदा विधानसभा कार्यकाल में भी मई 2018 के चुनाव में सबसे बड़ा दल होते हुए भी उनके पास लोकप्रिय जनादेश नहीं था। बावजूद इसके उन्होंने सरकार बनाने का दावा पेश किया और फिर चंद दिनों के भीतर ही उन्हें मुख्यमंत्री पद छोड़ना पड़ा क्योंकि विधानसभा में वह ज़रूरी संख्या नहीं जुटा सके थे। ज़ाहिर है, पार्टी आलाकमान इस उपहास के बाद उनसे बहुत खुश नहीं था। हालांकि, जुलाई 2019 में जोड़ तोड़ से सरकार बनाकर उन्होंने पार्टी के आहत मन पर मरहम लगाने का प्रयास किया, पर दोनों के बीच एक दूरी हमेशा महसूस हुई। राज्य मंत्रिमंडल के विस्तार से लेकर कई अन्य मसलों पर केन्द्रीय व राज्य नेतृत्व की दूरी साफ दिखी। इससे भी वहां पार्टी के भीतर खेमेबाज़ी बढ़ने लगी थी।

कर्नाटक दक्षिण में भाजपा का गढ़ है, जिसकी मिसाल देकर वह अन्य दक्षिण राज्यों में आधार मज़बूत करने का मंसूबा रखती है। लेकिन येदियुरप्पा का शासन उसे वह नज़ीर नहीं मुहैया करा पा रहा था यही नहीं, कर्नाटक में अगले दो वर्ष के भीतर ही चुनाव होने वाले हैं और वहां की राजनीतिक अस्थिरता ने लोगों को कमोबेश निराश ही किया है। तब तो और, जब राज्य कोरोना महामारी की गंभीर चुनौती से संघर्षरत है। बताने की आवश्यकता नहीं कि किसी भी प्रदेश में जल्दी जल्दी नेतृत्व बदलने से विकास की प्रक्रिया बाधित होती है, क्योंकि हर नेता की अपनी शासन दृष्टि, प्राथमिकताएं होती हैं। विडंबना यह है कि बड़ी पार्टियों के मज़बूत जनाधार वाले क्षेत्रीय राजनेता अब सबको साथ लेकर चलने का हुनर खोते आ रहे हैं और इसकी कीमत न सिर्फ वे खुद चुकाते हैं बल्कि पूरे प्रदेश को चुकानी पड़ती है।

कर्नाटक में पार्टी के विधायक अब जिसे भी नया मुख्यमंत्री चुनते हैं, उनकी सबसे बड़ी परीक्षा राजनीतिक मोर्चे पर पार्टी को एक रखने में तो होगी ही, प्रदेश के लोगों को एक कुशल प्रशासन देने में भी होगी, जिसकी राह कर्नाटक देख रहा है। उत्तराखंड में नेतृत्व परिवर्तन के बाद येदियुरप्पा को इस्तीफे के लिए मनाकर या फिर बाध्य करके आलाकमान ने अपने अन्य क्षत्रपों को भी संदेश दे दिया है कि सबको साधकर चलना होगा।❑❑

SHANTI MISSION (HINDI WEEKLY) NEW DELHI Postal Registration No. DL(C)-01/1266/2021-23
Publishing Date : **25July 2021** Posting Days : **MON. - TUE.** at **N.D.P.S.O.** New Delhi-110002 R.N.I. 57270/93

•द्रोह बनाम दायित्व•लापरवाही की हद •नम आंखों से येदियुरप्पा का इस्तीफ़ा

द्रोह बनाम दायित्व

सर्वोच्च न्यायालय ने एक बार फिर अंग्रेजी सरकार के समय बने राजद्रोह संबंधी कानून की निरर्थकता को रेखांकित करते हुए केन्द्र से पूछा है कि सरकार इसे रद्द क्यों नहीं कर देती। इससे पहले कई मामलों में फैसला सुनाते हुए अदालत स्पष्ट कर चुकी है कि सरकार की नीतियों की आलोचना करना राजद्रोह नहीं माना जाना चाहिए। लोगों की आलोचना जनतंत्र की मज़बूती के लिए आवश्यक है। पिछले दिनों विनोद दुआ मामले की सुनवाई के दौरान उसने इस बात पर विशेष जोर दिया था। इस वक्त राजद्रोह कानून के तहत देश की विभिन्न जेलों में अनेक पत्रकार, समाजसेवी और आंदोलनकारी बंद है। उनमें से कुछ पत्रकारों ने किसान आंदोलन के समर्थन में लिखना शुरू किया था, तो कुछ ने हाथरस में बलात्कार पीड़िता की मौत और फिर प्रशासन द्वारा रातोंरात उसके दाह से जुड़े तथ्य उजागर करने शुरू किए थे। इसी तरह भीमा कोरेगाँव मामले में कई समाजसेवियों और बुद्धिजीवियों पर राजद्रोह का मुक़दमा कर उन्हें जेलों में बंद किया गया था। इसे एडिटर्स गिल्ड और अन्य अनेक संस्थाओं ने चुनौती दी थी। फिर स्टेन स्वामी की जेल में मौत के बाद इस क़ानून के औचित्य पर चौतरफा सवाल उठने शुरू हुए। सर्वोच्च न्यायालय ने सभी संबंधित मामलों को जोड़कर सरकार से प्रश्न पूछा है।

राजद्रोह क़ानून ब्रिटिश सरकार ने इसलिए बनाया था कि वह अपने ख़िलाफ आवाज़ उठाने और आमजन को विद्रोह के लिए उकसाने वाले महात्मा गांधी जैसे नेताओं पर अंकुश लगा सके। तब बहुत सारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को इस क़ानून के तहत जेलों में ठूस दिया गया था। मगर जिस तरह ब्रिटिश हुकूमत के समय बने बहुत सारे क़ानून आज भी वजूद में हैं, उसी तरह राजद्रोह क़ानून भी बना हुआ है।

राजद्रोह क़ानून ब्रिटिश सरकार ने इसलिए बनाया था कि वह अपने ख़िलाफ आवाज़ उठाने और आमजन को विद्रोह के लिए उकसाने वाले महात्मा गांधी जैसे नेताओं पर अंकुश लगा सके। तब बहुत सारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को इस क़ानून के तहत जेलों में ठूस दिया गया था। उन्हें तरह-तरह की यातनाएं दी गईं। मगर जिस तरह ब्रिटिश हुकूमत के समय बने बहुत सारे क़ानून आज भी वजूद में हैं, उसी तरह राजद्रोह क़ानून भी बना हुआ है। हैरानी की बात है कि अब जब देश में लोकतंत्र है, तब ब्रिटिश हुकूमत द्वारा प्रताडना की मंशा से बनाए गए इस कानून को क्यों ज़िन्दा रखा ग्या है। शायद सभी सरकारें इस कानून को अपने लिए एक कारगर हथियार के रूप में देखती रही हैं। जब भी मौक़ा मिले, अपने विरोधियों की जुबान बंद करने के लिए इस क़ानून का इस्तेमाल किया जा सकता है। मगर अब अभिव्यक्ति का अधिकार मौलिक अधिकारों में अपनी जगह बना चुका है, जब स्वाभाविक रूप से इस कानून का उपयोग सरकारों के लिए आलोचना का बायस बनता रहा है। अक्सर राजद्रोह और देशद्रोह को एक-दूसरे का पर्याय भी बना दिया जाता है जबकि देशद्रोह की स्पष्ट व्याख्या है, जिसका संबंध देश की सुरक्षा से है।

केन्द्र की वर्तमान सरकार ने अपने पिछले कार्यकाल में अनेक ऐसे क़ानून को यह कहते हुए रद्द कर दिया था कि ब्रिटिश शासन के समय बने क़ानूनों का अब कोई औचित्य नहीं रह गया है। तब प्रधानमंत्री ने दावा भी किया था कि लोकतंत्र में ऐसे निरर्थक हो चुके तमाम क़ानूनों को धीरे धीरे ख़त्म कर दिया जाएगा। मगर राजद्रोह संबंधी क़ानून को रद्द करने के बजाय इसका सबसे अधिक बेजां इस्तेमाल हुआ। इस कानून के तहत जेलों में बंद कई लोग अनेक दुश्वारियां और जेल प्रशासन की यातनाएं झेल रहे हैं, जिसे मानवाधिकारों की दृष्टि से किसी भी रूप में जायज़ नहीं ठहराया जा सकता। सरकारों में अपनी आलोचना सहने का साहस होना ही चाहिए। छोटी-छोटी आलोचनाओं से आहत होकर लोगों को जेलों में ठूंस देने और उन्हें यातना देने से उन्हें शायद ही कुछ हासिल हो इसलिए सर्वोच्च न्यायालय के ताज़ा सुझाव पर केन्द्र सरकार को गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

लापरवाही की हद

समूची दुनिया के साथ-साथ हमारा देश भारत भी फिलहाल जिस संकट से जूझ रहा है उससे उबरने के उपायों पर अमल ही इससे पार पाने का रास्ता है। दरअसल, कोरोना विषाणु अपने बदलते स्वरूप की वजह से जिस स्तर की समस्या बन चुका है, उसमें उससे बचाव के नियम सबसे अहम हो जाते हैं लेकिन ऐसा लगातार देखा गया है कि सरकार के स्तर पर तो कोरोना से लड़ने के लिए क़ायदे/नियम की घोषणा कर दी जाती है, अधिसूचना भी निकाल दी जाती है, लेकिन ज़मीनी स्तर पर उसके पालन को लेकर बहुस्तरीय लापरवाही बरती जाती है। विडंबना यह है कि जागरुकता के अभाव में ऐसी लापरवाही न सिर्फ आम लोगों की ओर से बरती जाती है, बल्कि सरकार जिन अधिकारियों को नियम पर अमल सुनिश्चित करने के लिए डयूटी पर तैनात करती है, वे भी इसे लेकर उदासीनता बरतते हैं। कई जगहों पर यह देखा जा सकता है कि पूर्णबंदी में क्रमशः ढिलाई देने के साथ-साथ लोग भारी तादाद में सड़कों पर निकलने लगे हैं और अक्सर कोरोना से बचाव को लेकर बताए गए नियम/क़ायदों का पालन करना ज़रूरी नहीं समझते। जबकि बंदी में राहत देने का मतलब यह क़तई नहीं है कि कोरोनारोधी नियमों के उल्लंघन की भी छूट मिल गई है। यह समझना मुश्किल नहीं है कि मास्क पहनने और आपस में दूरी बरतने जैसे मामूली उपायों का ख़्याल नहीं रखने का नतीजा क्या हो सकता है। हैरानी की बात यह है कि आम लोग कई बार जानते बूझते हुए भी इन नियमों का पालन नहीं कर रहे है। शायद यही वजह है कि केन्द्र सरकार ने अब इस मसले पर आम लोगों को कोरोना से बचाव के लिए सावधानी बरतने की सलाह देने के साथ-साथ अधिकारियों के रवैये को लेकर भी सख़्ती दिखाई है। केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने कहा कि देश के कई हिस्सों में कोरोनारोधी नियमों का खुला उल्लंघन देखा जा रहा है। सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को भेजे पत्र में कहा गया है कि सार्वजनिक परिवहन से लेकर बाज़ारों तक में कोरोना उपयुक्त व्यवहार का पालन नहीं किया जा रहा है। इसके ख़तरे समझे जा सके हैं। इसलिए सरकार के मुताबिक़ भविष्य में नियमों का पालन कराने में नाकाम रहने पर संबंधित अधिकारियों के ख़िलाफ़ राज्यों को कार्रवाई करनी चाहिए।

फिलहाल भले ही कोरोना संक्रमण के मामलों में कमी देखी जा रही है, लेकिन अब भी दूसरी हर पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। ख़तरा टला नहीं है और तीसरी लहर की आशंका सिर पर गहराती जा रही है। ऐसे में अगर कोरोनारोधी नियम/कायदों पर अमल को लेकर इस स्तर की उदासीनता नहीं रोकी गई तो यह एक तरह से बड़े ख़तरे की घंटी है।

फिलहाल भले ही कोरोना संक्रमण के मामलों में कमी देखी जा रही है, लेकिन अब भी दूसरी हर पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। ख़तरा टला नहीं है और तीसरी लहर की आशंका सिर पर गहराती जा रही है। ऐसे में अगर कोरोनारोधी नियम/कायदों पर अमल को लेकर इस स्तर की उदासीनता नहीं रोकी गई तो यह एक तरह से बड़े ख़तरे की घंटी है। यह किसी से छिपा नहीं है कि दूसरी लहर में हुए नुकसान के पीछे विषाणु की खतरनाक और बदलती प्रकृति के साथ-साथ एक बड़ा कारण यह भी था कि लोगों ने बचाव के उपायों को लेकर कोताही बरतनी शुरू कर दी थी। यह सही है कि पूर्णबंदी की स्थिति में आर्थिक गतिविधियों के ठप्प होने के चलते आम लोगों की रोज़ी/रोटी और ज़िन्दगी के साथ-साथ देश की माली हालत पर भी बेहद प्रतिकूल असर पड़ता है लेकिन आर्थिक स्थिति संभालने के लिए दी गई छूट के दौरान जिस स्तर की लापरवाही देखी जा रही है, वह विषाणु के संक्रमण के लिहाज़ से ज़्यादा घातक साबित हो सकती है।

नम आंखों से येदियुरप्पा का इस्तीफ़ा

येदियुरप्पा मंत्रिमंडल में गृहमंत्री रहे बसवराज सोमप्पा बोम्मई कर्नाटक के नए मुख्यमंत्री बन चुके हैं। 2023 में होने वाले विधानसभा चुनाव में सत्ता का गणित साधने की कोशिश का गणित साधने की कोशिश की गई है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री पद से बीएस येदियुरप्पा की विदाई दीवार पर लिखी वह पुरानी इबारत थी, जो अब पढ़ी गई है। पिछले काफी समय से पार्टी की स्थानीय इकाई में उनके प्रति असंतोष के स्वर मुखर थे और इसका संदेश जनता में अच्छा नहीं जा रहा था। ऐसे में, पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व ने एक सीमा के बाद हस्तक्षेप किया, और उसकी परिणति यह इस्तीफा है। अभी चंद दिनों पहले येदियुरप्पा ने दिल्ली में पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से मुलाक़ात की थी और तभी से मुक़र्रर दिन और तारीख़ को लेकर अटकलें तेज़ हो गई थीं। कर्नाटक में भारतीय जनता पार्टी आज जिस मज़बूत स्थिति में है, उसमें येदियुरप्पा की अहम भूमिका से कोई इंकार नहीं कर सकता। राज्य के मज़बूत लिंगायत समुदाय पर प्रभावी पकड़ उनकी दावेदारी का सबसे वजनदार पहलू रही। पर चुनाव जीतना और शासकीर दक्षता, दोनों चीज़ें

कर्नाटक में पार्टी के विधायकों ने बसवराज सोमप्पन बोम्मई को नया मुख्यमंत्री चुना है, उनकी सबसे बड़ी परीक्षा राजनीतिक मोर्चे पर पार्टी को एक रखने में तो होगी ही, प्रदेश के लोगों को एक कुशल प्रशासन देने में भी होगी, जिसकी राह कर्नाटक देख रहा है। उत्तराखंड में नेतृत्व परिवर्तन के बाद येदियुरप्पा को इस्तीफे के लिए मनाकर या फिर बाध्य करके आलाकमान ने अपने अन्य क्षत्रपों को भी संदेश दे दिया है।

बाक़ी पेज 11 पर

ज़रूरी ऐलान

आपकी ख़रीदारी अवधि पते की चिट पर अंकित है। अवधि की समाप्ति से पूर्व रक़म भेजने की कृपा करें।

रक़म भेजने के तरीक़े:-

❶ मनीआर्डर द्वारा ❷ **Paytm** या **PhonePe** द्वारा **9811198820** पर **SHANTI MISSION**

❸ ऑनलाइन हेतु बैंक खाते का विवरण
SBI A/c **10310541455**
Branch: **Indraprastha Estate**
IFS Code: **SBIN0001187**

ख़रीदारी चन्दा

वार्षिक	Rs.130/-
6 महीने के लिए	Rs.70/-
एक प्रति	Rs.3/-

जानकारी के लिये सम्पर्क करें
साप्ताहिक
शांति मिशन
1, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23311455

अपने प्रिय अख़बार साप्ताहिक शांति मिशन को इंटरनेट पर देखने के लिये लॉगऑन करें:
www.aljamiat.in ——— www.jahazimedia.com
Mob. 9811198820 — E-mail: Shantimissionweekly@gmail.com

जमीअत ट्रस्ट सोसायटी की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक शकील अहमद सैयद ने शेरवानी आर्ट प्रिंटर्स, 1480, क़ासिमजान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवाकर मदनी हाल, न. 1, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित किया। संपादक:- मोहम्मद सालिम, फोन:- 23311455, 23317729, फैक्स:- 23316173